



भारत के मुख्य पुनव आरुत ज़ोनेट कुमर, नूटन के पारे में भिन्ने सिन्धे वानुकु स्कुल ऑफ लै नै नूटन के राष्ट्रीय नवतन रिस और अंतर्राष्ट्रीय लोकतंत्र रिस के कार्यक्रम को संबोधित करते हु।

दैनिक

राष्ट्रीय गरिमा

राष्ट्र भक्ति की अलख जगाता

www.rashtriyagarima.com



राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

■ भोपाल, शनिवार 19 सितम्बर 2026 ■ पृष्ठ : 8, मूल्य ₹ 2 ■ वर्ष : 31, अंक : 100 ■ RNI No.61858/95 ■ Email- rgarima2005@gmail.com

बाबा फरीद आगमन पर्व से पहले आतंकी साजिश नाकाम,एक गिरफ्तार

फरीदकोट। बाबा फरीद आगमन पर्व से पहले फरीदकोट में काउंटर इटैलिजेंस ने काथित आतंकी साजिश को नकारा करते हुए दो गेनेड के साथ एक युवक को गिरफ्तार किया है। आरोपी की पहचान गुरु अर्जन देव नगर निवासी नवजोत सिंह उर्फ नव के रूप में हुई है। पुलिस के अनुसार, नवजोत कनाडा का पीआर है और करीब एक सप्ताह पहले ही भारत लौटा था। काउंटर इटैलिजेंस के मुताबिक, आरोपी के पाकिस्तान स्थित आतंकी संगठनों से संपर्क होने का संदेह है। आरोप है कि उसने ड्रोन के जरिए विस्फोटक सामग्री मंगवाई थी। टीम ने उसे फिरोजपुर से एरिेटा पर फरीदकोट आते समय गिरफ्तार किया। आरोपी के खिलाफ थाना स्टेट स्पेशल ऑपरेशन सेल, फाजिल्का में एक्ससाईसिव सफ्टवेस एक्ट और यूएपीए के तहत मामला दर्ज किया गया है। 19 सितंबर से शुरू होने वाले पाँच दिवसीय बाबा फरीद आगमन पर्व से पहले हुई इस गिरफ्तारी को लेकर पुलिस आरोपी से उसके नेटवर्क और संगतिगत निज़ाने के संबंध में पूछताछ करेगी। आरोपी के पिता सुभा सिंह ने बताया कि उनका बेटा कनाडा का पीआर है और 12 सितंबर को ही भारत लौटा था। उनके मुताबिक, गुप्तचर थान नवजोत ने बताया था कि उसका कोई कोरिप्टर आने वाला है। इसके बाद वह बेटे के साथ कोरियर लेने सादिक चौक पहुंचे, जहां पुलिस ने उन्हें पकड़ लिया।

मानव तस्करी के मामले में बांग्लादेशियों समेत 9 दोषियों को अफ़कैद

हैदराबाद। एनआईए की विशेष अदालत ने 2019 के चर्चित मानव तस्करी मामले में बड़ फैसला सुनते हुए 8 बांग्लादेशी नागरिकों समेत कुल 9 आरोपियों को उम्रकैद की सजा सुनाई है। अदालत ने सभी दोषियों पर कुल 137 लाख रुपये का जुर्माना भी लगाया है। यह फैसला 17 सितंबर 2026 को सुनाया गया। राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) के मुताबिक, यह मामला सीमा पार से मानव तस्करी और बांग्लादेशी महिलाओं को अंधेध तरीके से भारत लाकर वेश्यावृत्ति के धंधे में धकेलने से जुड़ा था। जांच में सामने आया कि पीड़ित महिलाओं को औद्योगिक रूप से भारत में प्रवेश कराया गया और बाद में उन्हें जबरन देह व्यापार में धकेला गया। मामले की गंभीरता को देखते हुए एनआईए ने जांच अपने हथ में ली थी। एजेंसी ने जांच के दौरान गुप्त गप्त साक्ष्यों के आधार पर आरोपियों के खिलाफ आरोप पत्र दाखिल किया। सुनवाई के दौरान पेश किए गए साक्ष्यों के आधार पर अदालत ने 9 आरोपियों को दोषी ठहराते हुए सभी को आजीवन कारावास की सजा सुनाई। अदालत ने दोषियों पर कुल 1,37,000 रुपये का आर्थिक जुर्माना भी लगाया है। अदरेश को मुताबिक, यदि दोषी जुर्माने की राशि जमा नहीं करते हैं तो उन्हें इसके एवज में तीन महीने का अतिरिक्त साधारण कारावास सुनावना होगा। एनआईए के अनुसार,अदालत का यह फैसला सीमा पार से संचालित मानव तस्करी जैसे संगठित अपराधों के खिलाफ चल रही कार्यवाई में महत्वपूर्ण माना जा रहा है।

35 मिनट की देरी पर एयर इंडिया एक्सप्रेस के 8 क्रूर सदस्य निलंबित

नई दिल्ली। दुर्घ से अगस्तस आने वाली एयर इंडिया एक्सप्रेस की पलाइट के आठ क्रूर सदस्यों को पोर्ट-पलाइट अनिवार्य प्रक्रिया में देरी भारी पड़ गई। 2 अगस्त 2026 को दुर्घ से अगस्तस पहुंची पलाइट के वरु को लैंडिंग के बाद निर्धारित समय सीमा के भीतर पोर्ट-पलाइट डिवलैरेशन जमा करना था, लेकिन इसने 35 मिनट की देरी हो गई। विमान नियमों के अनुसार, अंतरराष्ट्रीय उड़ान के लैंड करने के दो घंटे के भीतर वरु सदस्यों को पोर्ट-पलाइट डिवलैरेशन और अनिवार्य श्रेथ एनालाइजर टेस्ट की प्रक्रिया पूरी करनी होती है। हालांकि, संबंधित पलाइट के वरु ने डिवलैरेशन 2 घंटे 35 मिनट बाद जमा किया। प्रक्रियालक देरी सामने आने के बाद एयरलाइन के अनिवार्य सुरक्षा प्रोटोकॉल के तहत सभी वरु सदस्यों का साइकोफिजिकल परावर्ण के सेवन की जांच के लिए मेडिकल टेस्ट कराया गया। राहत की बात यह रही कि सभी आठ सदस्यों की जांच रिपोर्ट नेगेटिव आई। हालांकि, टेस्ट रिपोर्ट में किसी तरह की गड़बड़ी नहीं मिलने के बावजूद एयरलाइन प्रबंधन ने निर्धारित समय सीमा के उल्लंघन को गंभीरता से लिया। सुर्रों के मुताबिक, एयर इंडिया एक्सप्रेस ने घटना की विस्तृत रिपोर्ट नागरिक उड्डयन महानिरीक्षण को सौंप दी है। वहीं,अनुशासनात्मक कार्यवाई के तहत एयरलाइन ने पलाइट के सभी आठ वरु सदस्यों को तीन महीने के लिए निलंबित कर दिया है।

मध्यप्रदेश में निवेश के लिए अनुकूल वातावरण तैयार किया गया है : मुख्यमंत्री डॉ.मोहन यादव

मुख्यमंत्री मोहन यादव ने जापान, कोरिया,अमेरिका और स्वीडन के प्रतिनिधियों से की मुलाकात

नई दिल्ली,मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने नई दिल्ली के यशोभूमि स्थित सेमीकॉन ईंडिया 2026 में मध्यप्रदेश पबेलियन का भ्रमण कर सेमीकंडक्टर एवं इलेक्ट्रॉनिक्स क्षेत्र की प्रमुख राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय कंपनियों के प्रतिनिधियों से मुलाकात की। उन्होंने मध्यप्रदेश में निवेश, तकनीकी सहयोग और सेमीकंडक्टर क्षेत्र के विस्तार की संभावनाओं पर उद्योग प्रतिनिधियों से चर्चा की। मुख्यमंत्री डॉ.यादव ने कहा कि मध्यप्रदेश में निवेश के लिए अनुकूल वातावरण तैयार किया गया है।। सेमीकंडक्टर, चिप डिजाइनिंग और इलेक्ट्रॉनिक्स जैसे उभरते क्षेत्रों में निवेश की व्यापक संभावनाएं हैं। प्रदेश सरकार उद्योगों को आवश्यक सहयोग और सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध है। मुख्यमंत्री ने पारस

निवेश पर राज्य सरकार अपनी नीतियों के आधार पर प्रतिबद्ध है



कारोबारी समूह विदेशी कंपनियों के साथ साझेदारी कर अपने व्यवसाय का विस्तार करना चाहते हैं। इससे प्रदेश में नए उद्योगों और कारोबार का व्यापक इको सिस्टम विकसित हो सकता है। मध्यप्रदेश विज्ञानस का एक बड़ा गोडॉल स्टेट और निवेश कैपिटल बनकर उभरा है, लगभग हर क्षेत्र के निवेशक मध्यप्रदेश आना चाहते हैं। उन्होंने कहा कि ऐसे सभी निवेशकों से हमारी तरफ से सवाद जारी है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रदेश में निवेशकों के लिए अनुकूल नीतियां, पर्याप्त लैंड बैंक और स्किल डेवलपमेंट की बेहतर संभावनाएं मौजूद हैं। आने वाले समय में मध्यप्रदेश सेमीकंडक्टर सेक्टर में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। भोपाल और इंदौर मेट्रोपोलिटन एरिया में इसकी व्यापक संभावनाएं हैं। पर्याप्त लैंड बैंक और स्किल डेवलपमेंट के लिए भी मध्यप्रदेश में बहुत संभावनाएं हैं।

सेमीकंडक्टर, थॉमसन सेमीकंडक्टर, स्मिन्टोनिकस एआई,एनएक्सपी ईंडिया, मार्गल सेमीकंडक्टर, एल एंड टी सेमीकंडक्टर और स्वदेश आईसी सेमीकंडक्टर सहित विभिन्न कंपनियों के

प्रतिनिधियों से सवाद किया। मुख्यमंत्री ने इंटरनेशनल सेमीकंडक्टर इंडस्ट्री ग्रुप (आईएसआईजी) के प्रतिनिधिमंडल से भी मुलाकात की। प्रतिनिधिमंडल में जापान की एफ़ोटेक, केनन और कैइजो, कोरिया की

हनवा और जेनेसम इंक तथा अमेरिका की मेकडरमिड अल्फा के प्रतिनिधि शामिल थे। जापानी प्रतिनिधिमंडल में आक्साईड कार्पोरेशन, स्कैल फोटोनिक्स और इम्प्यूट इंक के प्रतिनिधियों से भी चर्चा हुई।

धर्म को अंग्रेजी के ‘रिलीजन’ शब्द का समानार्थी मानना सही नहीं है : डॉ.भागवत

उज्जैन में आयोजित ‘युवा धर्म संसद’ को संघ प्रमुख मोहन भागवत ने किया संबोधित

उज्जैन, (एजेंसी)। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ.मोहन भागवत ने युवाओं से धर्म को पूजा-पद्धति की सीमाओं से बाहर निकाल कर जीवन और आचरण से जोड़ने का आह्वान किया है। उन्होंने कहा कि धर्म को अंग्रेजी के ‘रिलीजन’ शब्द का समानार्थी मानना सही नहीं है। ‘रिलीजन’ शब्द का संबंध बांधने और अनुशासन में रखने से है, जबकि धर्म व्यक्ति को मुक्त करता है। डॉ. भागवत ने सेवाज्ञ संस्थानम के तत्वावधान में यहां गीता भवन में आयोजित तीन दिवसीय युवा धर्म संसद में शुक्रवार को कहा कि भारत में धर्म जीवन के हर चरण में मौजूद रहता है। इसे मांमें या न मांमें, अस्तित्व के आरंभ से अंत तक बना रहता है और जीवन के अनेक नियम उसी के अनुरूप चलते हैं। गीता भवन में 17 से 19 सितंबर तक आयोजित ‘युवा धर्म संसद’ में देशभर से करीब 1,700 छात्र-छात्राएं भाग ले रहे हैं। कार्यक्रम में



शुक्रवार को करीब 300 विद्वान, शिक्षक, शोधकर्ता और धर्माचार्यों ने भी हिस्सा लिया। डॉ.भागवत उद्घाटन सत्र में शामिल हुए,जबकि मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव इसके समापन सत्र में 19 सितंबर को शामिल होंगे।संघ प्रमुख भागवत ने कहा कि मनुष्य जब अपने अहंकार में यह मान बैठता है कि दुनिया उसकी इच्छा और नियंत्रण के अनुसार चलेगी, वहीं से उसकी सबसे बड़ी गलतफहमी शुरू होती है। प्रकृति किसी व्यक्ति की सत्ता नहीं मानती और उसके नियम मनुष्य की इच्छा से नहीं बदलते। सूर्य का उदय और अस्त इसका सहज उदाहरण है। उन्होंने कहा कि पश्चिमी समाज ने भारत में धर्म

के आचरण,कर्मकांड और अनुशासन को देखा और उसे अपने यहां प्रचलित ‘रिलीजन’ के समान समझ लिया। बाद में भारत में भी धर्म के लिए इसी शब्द का इस्तेमाल होने लगा। मोहन भागवत ने कहा कि धर्म के कर्मकांड उसके अभ्यास का हिस्सा हैं, लेकिन कर्मकांड ही पूरा धर्म नहीं है। डॉ.भागवत ने इस दौरान मानव अहंकार को धर्म की समझ में सबसे बड़ी बाधाओं में से एक बताया। उन्होंने कहा कि व्यक्ति जब यह मानने लगता है कि सच कुछ उसके नियंत्रण में है और हर चीज उसकी इच्छा के मुताबिक होनी चाहिए,तब वह वास्तविकता से दूर होने लगता है। उन्होंने उस धारणा को भी खारिज किया कि भगवद्गीता और रामायण सेवानिवृत्ति के बाद पढ़ने वाले ग्रंथ हैं। उन्होंने कहा कि धर्म अस्तित्व के प्रारंभ से लेकर अंत तक बना रहता है, इसलिए युवावस्था में धर्म को समझना और उसे जीवन में उतारना उतना ही महत्वपूर्ण है। उन्होंने युवाओं से ऐसा जीवन जीने की अपील की, जिससे पूरा विश्व उनसे प्रेरणा ले।

बिना वीजा मलेशिया भेजे गए युवक की रिहाई व वतन वापसी की मांग

किशनगंज। रौटा थाना क्षेत्र अंतर्गत चरकपारा निवासी बिजली देवी के बेटे अजय कुमार पंडित के मलेशिया में गिरफ्तार होने के बाद परिवार की चिंता बढ़ गई है। परिजनों के अनुसार अजय कुमार पंडित को नाहिद गनी द्वारा कथित रूप से मोटी रकम लेकर बिना वैध वीजा के मलेशिया भेजा गया था। मलेशियन इमिग्रेशन ने 8 सितंबर 2026 को अजय को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है। बेटे की गिरफ्तारी की सूचना के बाद से अजय की मां बिजली देवी समेत पूरे परिवार का रो-रोकर बुरा हाल है। शुक्रवार को अजय की मां और उनके रिस्तेदारों ने पूर्व विधायक कोचाधाम मुजाहिद आलम से मुलाकात कर मामले में हस्तक्षेप करते हुए अजय की जल्द रिहाई और सुरक्षित भारत वापसी की मांग की। परिजनों का आरोप है कि अजय को विदेश भेजने के नाप पर नाहिद गनी ने रकम ली थी और उसे बिना वीजा के मलेशिया भेज दिया।

हाईवे पर छोड़े आवारा पशु तो नपेंगे मालिक, सरकार ने जारी किया सरस्वत फरमान

नई दिल्ली,(एजेंसी)। देश भर के राष्ट्रीय राजमार्गों और तेर रफ्तार एक्सप्रेसवे पर फरीदा भरे वाले वाहन चालकों को अब अचानक सामने आने वाले आवारा पशुओं के खतरे से मुक्ति मिलने का राह है। हाईवे पर बेसहारा मवेशियों के कारण आए दिन होने वाले जानलेवा सड़क हादसों पर लगाम कसने के लिए केंद्र सरकार ने कड़ा रुख अपनाया है। केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय ने इस संबंध में एक विस्तृत ‘स्टैंडर्ड ऑपरेंटिंग प्रोसीजर’ जारी किया है। नए नियमों के तहत यह किसी ने अपने पशुओं को हाईवे या एक्सप्रेसवे पर लावारिस छोड़ा, तो मालिक की पहचान कर उस पर भारी-भरकम जुर्माना

वायु सेना को मिले एलसीए तेजस मार्क-1 के दो ट्रेनर एयरक्राफ्ट

भारतीय वायु सेना के 40 विमानों के पुराने ऑर्डर की यह अंतिम खेप हैं

नई दिल्ली, (एजेंसी)। भारतीय वायु सेना को आज हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड (एचएएल) में बेंगलुरु में लाइट कॉम्बैट एयरक्राफ्ट (एलसीए) तेजस मार्क-1 के दो आखिरी ट्रेनर एयरक्राफ्ट सौंप दिए, जिससे एचएएल को दिए गए पहले ऑर्डर के सभी 40 विमानों की आपूर्ति पूरी हो गई। इसके साथ के बाद से आज ही वायु सेना को एचटीटी 40 बेसिक ट्रेनर एयरक्राफ्ट और पवन हंस लिमिटेड को ध्रुव नेक्स्ट जेनरेशन (एनजी) हेलीकॉप्टर भी सौंपे। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह और केंद्रीय नागरिक उड्डयन मंत्री राममोहन नायडू की मौजूदगी में शुक्रवार को एचएएल ने लाइट कॉम्बैट एयरक्राफ्ट तेजस के दो टिवन सॉफ्ट ट्रेनर्स वायु सेना को सौंपे। यह एलसीए मार्क-1 ट्रेनर विमान भारतीय वायु सेना के 40 विमानों के पुराने ऑर्डर की अंतिम खेप हैं। वायु सेना ने ये 40 विमान दो चरणों में मार्च,2006 और



दिसंबर, 2010 में ऑर्डर किए थे। इन्में से 38 विमान पहले ही वायु सेना को सौंपे जा चुके हैं। अब अंतिम दो टिवन-सॉफ्ट ट्रेनर विमानों की डिलीवरी के साथ इस शुरुआती एलसीए मार्क-1 ऑर्डर की आपूर्ति पूरी हो गई। इसके बाद एचएएल पर एलसीए मार्क-1ए की आपूर्ति का दबाव बढ़ गया है। वायु सेना ने एचएएल को दो किश्तों में 180 तेजस मार्क-1 ए लड़ाकू विमान के ऑर्डर दिए हैं। पहला ऑर्डर फरवरी, 2021 में 83 लड़ाकू विमानों के लिए और दूसरा ऑर्डर पिछले साल सितंबर में 97 विमानों के लिए दिया गया था। एचएएल से दोनों सौंदों के

तहत वायु सेना को 141 लड़ाकू और 39 ट्रेनर विमान मिलने हैं। लेकिन मिसाइल और रडार इंटीग्रेशन की दिक्कतों के साथ-साथ इंजन की कमी के कारण इसमें देरी हो रही है। एचएएल के चेयरमैन और प्रबंध निदेशक रवि कुमार ने तेजस मार्क-1ए की आपूर्ति में देरी की वजह विमान में मिसाइल और रडार इंटीग्रेशन की दिक्कत और इंजन की कमी को बताया है। उन्होंने कहा कि हमें अगले चार से पांच साल में पूरे एयरक्राफ्ट की आपूर्ति होने की उम्मीद है। इनका उत्पादन बेंगलुरु और नासिक फ़ैक्ट्रीज में किया जा रहा है। हम बड़े पैमाने पर प्राइवेट सेक्टर की भागीदारी का इस्तेमाल कर रहे हैं, चाहे वह एलसीए हो, हेलीकॉप्टर हो, या एचएएल पर एलसीए मार्क-1ए की आपूर्ति का काम संभालते हैं, जबकि कई नॉन-कोर एक्टिविटी प्राइवेट इंडस्ट्री पार्टनर करते हैं। सौंपेडी रवि कुमार ने यह भी कहा कि मिसाइल और रडार इंटीग्रेशन की दिक्कतों की वजह से तेजस मार्क-1ए में देरी हो रही है, लेकिन जल्द ही इसका हल निकलने की उम्मीद है।



टोका जाएगा। सड़क परिवहन मंत्रालय का यह सख्त कदम सुपीम कोर्ट के उस निर्देश के बाद सामने आया है, जिसमें हाईवे से आवारा पशुओं को हटाने के लिए एक विस्तृत ‘स्टैंडर्ड ऑपरेंटिंग प्रोसीजर’ जारी किया है। नए नियमों के तहत यह किसी ने अपने पशुओं को हाईवे या एक्सप्रेसवे पर लावारिस छोड़ा, तो मालिक की पहचान कर उस पर भारी-भरकम जुर्माना

सरकार ने तत्काल प्रभाव से यह एसओपी जारी की है, जिसका प्राथमिक मकसद तेज रफ्तार वाली सड़कों को पूरी तरह सुरक्षित और दुर्घटनामुक्त बनाना है। नए दिशा-निर्देशों के मुताबिक, भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग आदेश दिया गया था। शीर्ष अदालत ने सड़कों पर पशुओं की वजह से होने वाली भीषण दुर्घटनाओं पर स्वतः संज्ञान लिया था। अदालत के कड़े रुख के बाद केंद्र

पहचान करेगी, जहां मवेशियों के कारण सबसे ज्यादा हादसे दर्ज किए जाते हैं। इसके बाद इन जानवरों को बेहद सुरक्षित तरीके से रेस्क्यू कर स्थानीय प्रशासन द्वारा संचालित एनिमल शेल्टर होम में भेजा जाएगा। जानवरों को पकड़ने और शेल्टर तक ले जाने का पूरा वित्तीय खर्च संबंधित हाईवे एजेंसियां खुद वहन करेंगी। सरकार की इस नई व्यवस्था का मुख्य केंद्र पशुपालकों की सीधी जवाबदेही तय करना है। राज्य सरकारों और स्थानीय निकायों को शेल्टर होम में आने वाले सभी जानवरों का पूरा रिकॉर्ड रखने के निर्देश दिए गए हैं। इसके साथ ही इन पशुओं के मालिकों को ट्रैक करने के लिए विशेष अभियान चलेगा। पशु अतिचार अधिनियम, 1871’ की धारा 25 के तहत अधिकारियों का सख्त कार्यवाई करने के अधिकार दिए गए हैं।

सुविचार

परमात्मा के प्रत्येक रूप के अनुरूप अपना रूप बना लो।
- श्रवदेव

बिजनौर में आबादी में गुलदर को दस्तक से दहशत,घरों में कैद हुए लोग

बिजनौर। उत्तर प्रदेश के जनपद बिजनौर में थाना नहटौर के मोहल्ला नौधा में बीती अर्धरात्रि आबादी के बीच गुलदर दिखाई देने से हड़कान मचा गया। करीब 2:30 बजे गुलदर को गलियों में रहलकटनी करते देख स्थानीय लोगों ने दहशत फैल गई। मामले की जानकारी पर वन विभाग ने लोगों को सावधान करते हुए गुलदर को पकड़ने की कार्यवाई शुरू कर दी है। प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक, बीती रात के सन्नाटे में गुलदर आबादी वाले इलाके में पहुंचा और झप-झप धुनते हुए शिकार की तलाश करता दिखाई दिया।

दिल्ली में तेज रफ्तार कार ने बाइक सवार को कई मीटर तक धसीटा

नई दिल्ली। देश की राजधानी दिल्ली के आरके पुरम इलाके में एक रोडटे हड़े कर देने वाला सड़क सदमा सामने आया है। आरके पुरम मेट्रो स्टेशन के पास एक तेज रफ्तार अनियंत्रित कार ने सड़क किनारे खड़ी मोटरसाइकिल में जोरदार टक्कर मार दी। टक्कर इतनी भीषण थी कि कार बाइक को काफी दूर तक धसीटते हुए ले गई। गनीमत यह रही कि बाइक पर बैठे युवक समय रहते नीचे छिटक गया, जिससे उसकी जान बाल-बाल बच गई।

मोदी कैबिनेट में बड़े फेरबदल की आहट,मंत्रियों का ‘रिपोर्ट कार्ड’ परखेंगे पीएम

23-24 सितंबर को महामंथन,समूह बनाकर होगी मंत्रियों के काम की कसौटी

नई दिल्ली। केंद्र की सत्ता में अपने तीसरे कार्यकाल के अहम पड़ाव पर खड़ी मोदी सरकार में क्या जल्द ही बड़ा फेरबदल होने जा रहा है? प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा अगले सप्ताह बुलाई गई दो दिवसीय विशेष 'चिंतन बैठक' ने राजनीतिक गलियारों और लुटियंस दिल्ली में हलचल तेज कर दी है। 23 और 24 सितंबर को होने वाली इस हाई-प्रोफाइल बैठक में सभी केन्द्रीय कैबिनेट मंत्रियों को दिल्ली में ही मौजूद रहने का फरमान जारी किया गया है।



आधिकारिक तौर पर इसे नीतियों और प्रशासनिक सुधारों की समीक्षा बताया जा

रहा है, लेकिन बैठक के समय को देखते हुए मंत्रिपरिषद में व्यापक फेरबदल की अटकलें चरम पर हैं। यह बैठक नियमित कैबिनेट बैठकों की तरह केवल फैसलों पर मुहर लगाने वाली नहीं होगी, बल्कि एक गहन मंथन सत्र के रूप में आयोजित की जा रही है। सूत्रों के मुताबिक, मंत्रियों को अलग-अलग समूहों में बांटा जाएगा, जहां वे शासन व्यवस्था, संवाद, सुधार और जनहित के मुद्दों पर सीधे विचार-विमर्श करेंगे। कई प्रमुख मंत्रालयों को अपनी उपलब्धियों और सुधारों पर विशेष प्रेजेंटेशन देने के निर्देश भी दिए गए हैं। पीएम मोदी स्वयं यह परखेंगे कि फाइलों में

बनी नीतियां धरातल पर आम जनता के 'ईज ऑफ लिविंग' में कितना बदलाव ला पा रही हैं। राजनीतिक हलकों में इस चिंतन बैठक को संभावित कैबिनेट फेरबदल की पुष्टभूमि के तौर पर देखा जा रहा है। सरकार अपने वर्तमान कार्यकाल के रणनीतिक मोड़ पर है और आने वाले महीनों की राजनीतिक व नीतिगत चुनौतियों से निपटने के लिए नई ऊर्जा की जरूरत महसूस की जा रही है। ऐसे में मंत्रियों के प्रदर्शन, काम की रफ्तार और मंत्रालयों के बीच तालमेल के आधार पर जिम्मेदारियों में फेरबदल की संभावनाओं को हवा मिल गई है। हालांकि, सरकार या संगठन की ओर से इस संबंध में

अभी कोई आधिकारिक बयान नहीं आया है। मोदी सरकार के इतिहास पर नजर डालें तो आखिरी बार व्यापक स्तर पर मंत्रिमंडल में फेरबदल 7 जुलाई 2021 को किया गया था, जब कई बड़े चेहरों की छुट्टी कर नए नेताओं को मौका दिया गया था। इसके बाद 2024 में तीसरे कार्यकाल के गठन के बाद से अब तक मंत्रिपरिषद में कोई बड़ा संगठनात्मक बदलाव देखने को नहीं मिला है। यही वजह है कि 23 और 24 सितंबर को होने वाली इस दो दिवसीय समीक्षा बैठक को मंत्रियों के भविष्य और सरकार के नए रोडमैप के लिहाज से बेहद निर्णायक माना जा रहा है।

जन्म और मृत्यु के रजिस्ट्रेशन से जुड़े नियमों में बड़ा बदलाव होने जा रहा

1 अक्टूबर से 2 साल बाद रजिस्ट्रेशन के लिए मजिस्ट्रेट की मंजूरी जरूरी

नई दिल्ली। देश में अब जन्म और मृत्यु के रजिस्ट्रेशन से जुड़े नियमों में बड़ा बदलाव होने जा रहा है। जन्म एवं मृत्यु पंजीकरण (संशोधन) अधिनियम, 2026 के प्रावधान 1 अक्टूबर 2026 से लागू होंगे। नए प्रावधानों के तहत जन्म या मृत्यु का रजिस्ट्रेशन कराने में देरी होने पर प्रक्रिया पहले के मुकाबले अधिक सख्त होगी। खास तौर पर घटना के दो साल से अधिक समय बाद रजिस्ट्रेशन कराने के लिए प्रथम श्रेणी के न्यायिक मजिस्ट्रेट के आदेश की जरूरत होगी। भारत के रजिस्ट्रार जनरल मृत्युंजय कुमार नारायण ने बुधवार को इसकी जानकारी दी। उन्होंने गजट अधिसूचना जारी कर बताया कि केंद्र सरकार ने 1 अक्टूबर 2026 को अधिनियम के प्रावधान लागू होने की तारीख तय की है। नए कानून के तहत जन्म या मृत्यु की घटना के दो साल से अधिक समय बाद रजिस्ट्रेशन के लिए आवेदन करने पर प्रथम श्रेणी के न्यायिक मजिस्ट्रेट का आदेश अनिवार्य होगा। यानी दो साल से अधिक पुराने



जन्म या मृत्यु के मामलों का रजिस्ट्रेशन अब सामान्य प्रशासनिक प्रक्रिया के जरिए नहीं कराया जा सकेगा। ऐसे मामलों में न्यायिक स्तर पर जांच और मंजूरी की प्रक्रिया से गुजरना होगा। अगर जन्म या मृत्यु के रजिस्ट्रेशन के लिए एक साल से अधिक,लेकिन दो साल के भीतर आवेदन किया जाता है, तो संबंधित अधिकारी की मंजूरी लेनी होगी। ऐसे मामलों में जिलाधिकारी, उप-जिलाधिकारी या अधिकृत कार्यकारी मजिस्ट्रेट आदेश जारी कर सकते हैं। अधिकारी को रजिस्ट्रेशन से पहले दी

गई जानकारी की सत्यता की जांच करनी होगी। इसके बाद निर्धारित शुल्क जमा करने पर रजिस्ट्रेशन किया जा सकेगा। नए प्रावधानों में देरी से रजिस्ट्रेशन के लिए अलग-अलग स्तर पर जांच और मंजूरी की व्यवस्था की गई है। इसका उद्देश्य जन्म और मृत्यु की घटनाओं का समय पर रजिस्ट्रेशन सुनिश्चित करना और आधिकारिक रिकॉर्ड को अधिक व्यवस्थित एवं अद्यतन रखना है। जन्म एवं मृत्यु पंजीकरण (संशोधन) विधेयक को संसद के दोनों सदनों ने पारित किया था। राष्ट्रपति की मंजूरी मिलने

के बाद यह कानून बन गया। यह मूल जन्म एवं मृत्यु पंजीकरण अधिनियम, 1969 में संशोधन करता है। इससे पहले 2023 में भी इस कानून में संशोधन किया गया था, जिसके प्रावधान 1 अक्टूबर 2023 से लागू हुए थे। जन्म एवं मृत्यु पंजीकरण अधिनियम, 1969 का उद्देश्य देश में जन्म और मृत्यु के रजिस्ट्रेशन को नियंत्रित करने के लिए कानूनी व्यवस्था उपलब्ध कराना है। कानून के तहत जन्म और मृत्यु का रजिस्ट्रेशन अनिवार्य है। जन्म प्रमाणपत्र किसी व्यक्ति की जन्मतिथि और पहचान से जुड़े महत्वपूर्ण दस्तावेजों में शामिल है,जबकि मृत्यु प्रमाणपत्र मृत्यु की आधिकारिक पुष्टि के लिए महत्वपूर्ण रिकॉर्ड होता है। नए प्रावधानों में देरी से रजिस्ट्रेशन की प्रक्रिया सख्त करने का उद्देश्य लोगों को जन्म और मृत्यु की घटनाओं की जानकारी समय पर दर्ज कराने के लिए प्रोत्साहित करना है। सरकार के अनुसार,इससे आधिकारिक रिकॉर्ड समय पर अपडेट रखने और जन्म-मृत्यु से संबंधित आंकड़ों को अधिक विश्वसनीय बनाने में मदद मिलेगी।

राजधानी दिल्ली में किशोरी से गैंगरेप के बाद चाकू से गोदकर कर दी हत्या

प्रेमी ने दोस्तों संग की दरिंदगी, खुले मैदान में पड़ा मिला नौवा हुआ शव

नई दिल्ली,18 सितंबर ,(एजेंसी)। बाहरी दिल्ली के स्वरूप नगर इलाके में एक नाबालिग लड़की के साथ गैंगरेप के बाद बर्बरता से हत्या करने का दिल दहला देने वाला मामला सामने आया है। दरिंदगी की इस वारदात को किशोरी के कथित प्रेमी ने अपने तीन नाबालिग दोस्तों के साथ मिलकर अंजाम दिया था। पुलिस की शिकायत के डर से आरोपियों ने किशोरी पर चाकू से ताबड़तोड़ वार कर उसकी जान ले ली। दिल्ली पुलिस ने 50 से अधिक सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगालने के बाद एक संदिग्ध टेंपो के जरिए इस खौफनाक वारदात की गुत्थी सुलझाते हुए मुख्य आरोपी और तीन नाबालिगों को दबोच लिया है। वारदात का खुलासा 13 सितंबर की सुबह तब हुआ,जब स्वरूप नगर थाना



पुलिस को कुशक रोड स्थित लाल बार्डड़ी के पास जयपाल राणा के खेत के खुले मैदान में एक शव पड़े होने की सूचना मिली। शव बेहद क्षत-विक्षत हालत में था और जंगली जानवरों ने उसे बुरी तरह नोंच खाया था। चेहरे और शरीर की हालत देखकर शुरुआत में पुलिस ने उसे किसी वयस्क महिला का शव समझा था। क्राइम और फोरेंसिक टीमों ने मौके से साक्ष्य जुटाकर शव को पोस्टमार्टम के लिए भिजवाया। बाद में जब परिजनों ने पहचान

की,तब यह खुलासा हुआ कि मृतका महज एक नाबालिग किशोरी थी। अतिरिक्त पुलिस उपायुक्त लोकेश वरन के नेतृत्व में पुलिस टीमों ने घटनास्थल और आसपास के सभी रास्तों की पड़ताल शुरू की। अंधेरा होने के बावजूद 50 से अधिक सीसीटीवी फुटेज की बारीकी से जांच करने पर एक संदिग्ध टेंपो की हलचल नजर आई। नंबर प्लेट साफ न दिखने पर पुलिस ने अलग-अलग चौराहों के कैमरों को जोड़कर टेंपो का पूरा रूट ट्रैक किया। आखिरकार 15 सितंबर की रात यह टेंपो खड्डा कॉलोनी में खड़ा मिल गया। पुलिस ने चालक को हिरासत में लेकर कड़ी पूछताछ की, जिसके बाद पूरे हत्याकांड की परतें खुलती चली गईं। पुलिस जांच में सामने आया कि मुख्य आरोपी मृतका का कथित प्रेमी था। वारदात वाली रात उसने अपने दोस्तों के साथ पहले जमकर शराब पी।

मतदाता सूची से नाम हटाने के मामले में सुप्रीम कोर्ट में 21 को सुनवाई



याचिकाकर्ता का दावा-दिल्ली में 47 लाख लोगों के नाम सूची से हटाए गए

नई दिल्ली। दिल्ली में मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण के दौरान नाम हटाए जाने को चुनौती देने वाली याचिका पर उच्चतम न्यायालय 21 सितंबर को सुनवाई करेगा। प्रधान न्यायाधीश सर्वकांत की अध्यक्षता वाली तीन सदस्यीय पीठ में न्यायमूर्ति जयमाल्या बागचि और न्यायमूर्ति वी. मोहना शामिल हैं। पीठ ने कहा कि विशेष गहन पुनरीक्षण से जुड़े अन्य मामले भी अगले सप्ताह सुचीबद्ध हैं, इसलिए इस याचिका पर सोमवार को सुनवाई की जाएगी। याचिकाकर्ता की ओर से अधिवक्ता प्रशांत भूषण ने अदालत के समक्ष कहा कि

दिल्ली की मसौदा मतदाता सूची से करीब 47 लाख लोगों के नाम हटाए गए हैं और इनमें से करीब 33 लाख लोगों को चुनाव आयोग ने नोटिस जारी किए हैं। उनका आरोप है कि नोटिस पाने वाले लोगों के नाम और उनके नाम हटाए जाने के आधार सार्वजनिक नहीं किए गए हैं। उन्होंने यह भी कहा कि 'तार्किक विवेचन' और 'मानचित्रण नहीं होने' जैसी श्रेणियों का आधार क्या है। चुनाव आयोग ने 31 अगस्त को दिल्ली की विशेष गहन पुनरीक्षण प्रक्रिया के बाद मसौदा मतदाता सूची प्रकाशित की थी। दिल्ली के कुल करीब 1.45 करोड़ पंजीकृत मतदाताओं में से लगभग 47.7 लाख नाम मसौदा सूची में शामिल

नहीं किए गए। इनमें करीब 97.5 लाख मतदाताओं के गणना प्रपत्र प्राप्त कर उन्हें डिजिटल रूप से दर्ज किया गया था। आकाशवाणी की रिपोर्ट के अनुसार, 47 लाख 56 हजार 722 मतदाताओं के गणना प्रपत्र घर-घर सत्यापन के दौरान प्राप्त नहीं हो सके। इन मतदाताओं को अनुपस्थित, स्थानांतरित, मृत या एक से अधिक स्थानों पर पंजीकृत जैसी श्रेणियों में रखा गया था। चुनाव आयोग के अनुसार, विशेष गहन पुनरीक्षण के दौरान 43.32 लाख से अधिक मतदाता या तो अपने पते पर अनुपस्थित पाए गए या स्थानांतरित हो चुके थे। 2.82 लाख से अधिक मतदाताओं की मृत्यु होने की जानकारी मिली, जबकि 1.41 लाख से अधिक मतदाताओं के नाम एक से अधिक स्थानों पर दर्ज पाए गए। मसौदा सूची से नाम हट जाने का अर्थ अंतिम रूप से मतदाता सूची से नाम हट जाना नहीं है। दिल्ली के मुख्य निर्वाचन अधिकारी के अनुसार, जिन पात्र मतदाताओं के नाम मसौदा सूची में नहीं हैं, वे 30 सितंबर तक प्रपत्र-6 और आवश्यक दस्तावेजों के साथ अपना दावा प्रस्तुत कर सकते हैं।

लखनऊ में अंतरजनपदीय गांजा तस्क़र गिरोह के दो अपरोपित गिरफ्तार

लखनऊ। उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ में नगराम थाना की पुलिस टीम ने बीती रात गुरुवार को शिवपुरा मोड़ पर चेकिंग के दौरान अंतरजनपदीय गांजा तस्क़र गिरोह के दो आरोपितों को गिरफ्तार किया है। उनके कब्जे से 12.750 किलोग्राम अवैध गांजा बरामद हुआ है, जिसकी अनुमानित कीमत करीब सात लाख रुपये है। आरोपितों के पास से गांजा के अलावा एक लगजरी कार, मोबाइल समेत अन्य चीजें बरामद हुई हैं। पुलिस उपायुक्त दक्षिणी मो. मुश्ताक ने शुक्रवार को गांजा तस्क़रों के पकड़े जाने का खुलासा किया। उन्होंने पत्रकारों को बताया कि थाना नगराम पुलिस गंगागंज मार्ग पर ग्राम शिवपुरा मोड़ पर चेकिंग कर रही थी। इस दौरान एक सफारी वाहन (यूपी 32 ईएल 8000) को रोका गया। वाहन की चेकिंग के दौरान बोरी में मादक पदार्थ बरामद हुआ। पुलिस वाहन में सवार दो युवकों को गिरफ्तार कर लिया। पूछताछ में उनकी पहचान मूलरूप से बाराबंकी निवासी सचिन सिंह और ग्राम तमोरिया निवासी सत्यम सिंह के रूप में हुई है। पूछताछ में आरोपितों ने बताया कि एक गिरोह बनाकर लखनऊ और उसके आस-पास के जिलों में गांजा तस्क़री का कार्य करते हैं।



BURGO
CONSTRUCTION

BURGO CONSTRUCTION

WHERE QUALITY MEETS INNOVATION

- ✓ CONSTRUCTION
- ✓ RENOVATION
- ✓ DESIGNING
- ✓ CONSULTATION
- ✓ PLANNING
- ✓ MANAGEMENT

CALL NOW

+91-860-2000-710 **WWW.BURGOCONSTRUCTION.COM**



24/7 SERVICE

प्राकृतिक तकाजों को नजरअंदाज

नेपाल की त्रासदी का संदेश है कि प्राकृतिक तकाजों को नजरअंदाज करने का समय बीत चुका है। विकास के नाम पर पर्यावरणीय सुरक्षा की बलि देना जारी रहा, तो ऐसी घटनाओं से बचना संभव नहीं रह जाएगा। ग्लोबल वॉर्मिंग के कारण ग्लेशियर पिघल रहे हैं, यह चर्चा दशकों पुरानी हो चुकी है। इसके क्या घातक परिणाम होंगे, इसको लेकर वैज्ञानिक चेतावनियां भी आम चर्चा में रही हैं। कई दिन की जांच-पड़ताल के बाद अब यह साफ है कि नेपाल में 26 अगस्त को जो हुआ, वह उन चेतावनियों का ही साकार रूप लेना था। इसीलिए उस रोज हुई ग्लेशियर टूटने की घटना को महज प्राकृतिक आपदा के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए। स्पष्टतः यह हिमालय के पारिस्थितिकी तंत्र पर जलवायु परिवर्तन के हुए प्रभाव का परिणाम है। इसलिए यह एक गंभीर चेतावनी है। इसे ध्यान में रखना चाहिए कि ग्लेशियल झील के फटने से आने वाली बाढ़ जैसी त्रासदियां अनहोनी का हो जाना भर नहीं हैं। बल्कि ये इनसान की अ-दूरदर्शिता का सीधा परिणाम हैं। 26 अगस्त को नेपाल-चीन सीमा के पास लांगटांग लिरुंग क्षेत्र में एक विशाल ग्लेशियर अचानक खिसक गया। यह घटना लगभग 5,200 मीटर की ऊंचाई पर हुई। ग्लेशियर टूट कर लगभग 1,200 मीटर नीचे स्थित घाटी में गिरा। उसके प्रभाव से तीव्र वर्षण पैदा हुआ और अत्यधिक बर्फ पिघलकर गारे और चट्टानों के साथ बह निकली। यह घटना बताती है कि उच्च हिमालयी क्षेत्रों में हर पल मॉनिटरिंग और उपग्रह आधारित निगरानी की कितनी कमी है। समय पर हिमनद झील के बढ़ते जलस्तर का आकलन कर निचले इलाकों के लिए चेतावनी जारी कर दी जाती, तो जान-माल के नुकसान को सीमित किया जा सकता था। यह भी गौरतलब है कि हिमालय जैसे पारिस्थिकीय नजरिए से नाजुक क्षेत्र में बिना ठोस पर्यावरणीय प्रभाव का मूल्यांकन किए पनाबिजली परियोजनाओं, सड़कों, और सुरंगों का अंधाधुंध निर्माण किया जा रहा है। इससे ग्लेशियरों के तेजी से पिघलने का जोखिम कई गुना बढ़ा है। उधर बढ़ते वैश्विक तापमान के कारण हिमनद तेजी से पिघलकर खतरनाक झीलों का रूप ले रहे हैं। कुल मिलाकर इस त्रासदी का संदेश है कि प्रकृति के तकाजों को नजरअंदाज करने का समय बीत चुका है। विकास के नाम पर पर्यावरणीय सुरक्षा की बलि देना और जलवायु परिवर्तन संबंधी चेतावनियों को नजरअंदाज करना जारी रहा, तो ऐसी घटनाओं से बचना अब संभव नहीं रह गया है।

राशिफल

मेष राशि: मेष राशि वालों आज आपका दिन व्यस्तता से भरा रहेगा। आज आपको व्यापारिक लाभ कमाने का बेहतरीन अवसर प्राप्त होगा, आपके आय के नए स्रोत बनेंगे, आपका आर्थिक पक्ष मजबूत रहेगा। आज ऑफिस में थोड़ा ज्यादा काम रहेगा, जिसकी वजह से आपको तारीफ़िक कवचन हो सकती है। आज आर्थिक मामलों में माता पिता का सहयोग मिलता रहेगा।

वृषभ राशि: वृष राशि वालों आज का दिन आपके लिए ठीक-ठाक रहने वाला है। आज आप कारोबार से जुड़े मामलों पर ध्यान देंगे और उसे आगे बढ़ाने में किसी की मदद लेंगे। आज आपको उच्चाधिकारी के सामने बात रखने पर पॉजिटिव रिएपॉन्स मिलेगा। आज इस राशि की महिलाएं अपने जीवनसाथी को आज कुछ मीठा बना कर खिला सकती है।

मिथुन राशि: मिथुन राशि वालों आज का दिन आपके लिए मिला जुला रहने वाला है। आज आप कार्यक्षेत्र में अच्छ प्रदर्शन करेंगे, जिसमें कलीग का भरपूर सहयोग प्राप्त होगा। आज आप कंस्ट्रक्शन से जुड़े कार्यों में किसी अनुभवी व्यक्ति की सलाह ले सकते हैं, जिससे आपका काम अच्छ और आसानी से हो जायेगा।

कर्क राशि: कर्क राशि वालों आज का दिन आपके लिए अच्छ रहने वाला है। आज आपको रोजगार के तमाम बेहतरीन अवसर प्राप्त होंगे और आपकी आय के नए स्रोत भी बनेंगे, जिससे आपका आर्थिक पक्ष मजबूत रहेगा। आज प्रोजेक्ट वर्क में आपको अपने जीवनसाथी का सहयोग मिलेगा, जो आगे सफलता के लिए मददगार साबित होगा।

सिंह राशि: सिंह राशि वालों आज का दिन आपके अनुकूल बना रहेगा। आज आप अपने सहकर्मियों के साथ मित्रवत व्यवहार करें, तो आने वाले समय में वो आपका अच्छ लाभ करायेगे। अगर आप अपने खर्चों पर नियंत्रण बनाए रखेंगे तो धीरे-धीरे आपका आर्थिक पक्ष मजबूत होगा।

कन्या राशि: कन्या राशि वालों आज का दिन आपके लिए उत्तम रहने वाला है। आज आप पेंडिंग वक़्त निपटाने के लिए किसी करीबी की मदद ले सकते हैं। आज आप परिवार के सदस्यों के साथ किसी धार्मिक यात्रा पर जाने के ल्गानिक कर सकते हैं। आज आप कुछ समय मित्रों के साथ बितायेंगे और किसी दोस्त की बर्थडे पार्टी डेनॉय करेंगे।

तुला राशि: तुला राशि वालों आज का दिन आपके लिए बेहतर रहने वाला है। आज आप अपने कारोबार में डबल मुनाफ़ा कमायेंगे और परिवार की जरूरतों को पूरा करने में सफल बनेंगे। आज आपको बड़ी का आसीर्वाद मिलेगा, जिससे आपके काम में उन्नति होगी और आपका मान सम्मान बढ़ेगा। आज आपके घर में शुभ समाचार मिलने की सम्भावना बन रही है, आपका दाम्पत्य जीवन सुखमय व्यतीत होगा।

वृश्चिक राशि: वृश्चिक राशि वालों आज का दिन आपके लिए लाभदायक रहने वाला है। आज आप अपने बिजनेस में कुछ बदलाव कर सकते हैं, जिसका जल्द ही आपको पॉजिटिव रिएस्पॉ मिलेगा। आज आपकी मुलाकात बपान के किसी दोस्त से होगी, आपकी पुरानी यादें ताजा होंगी। आज आपको किसी समस्या से छुटकारा मिलेगा, जिससे आपके दिल का बोझ कम होगा।

धनु राशि: धनु राशि वालों आज का दिन आपके लिए अच्छ रहने वाला है। आज आप व्यापारिक लाभ कमाने के साथ-साथ अपने खर्चों के ऊपर भी ध्यान दें। आज आप कोई भी निर्णय लेने से पहले उस पर सोच विचार करें और घर के बड़े से भी सलाह मंगवाकर कर सकते हैं। इस राशि के राजनीतिक क्षेत्रों में कार्यरत व्यक्तियों को बड़े नेताओं से मिलने का अवसर मिलेगा।

मकर राशि: मकर राशि वालों आज का दिन आपके लिए ठीक ठाक रहने वाला है। आज आपकी योजनाओं को सही दिशा मिलेगी, जिससे वो अपने उद्देश्य की तरफ आगे बढ़ेंगी। आज आपकी कुछ नए लोगों से मुलाकात होगी, जो काम में आपकी मदद करेंगे।

कुम्भ राशि: कुम्भ राशि वालों आज का दिन आपके लिए अच्छ रहने वाला है। आज आप व्यावसायिक रिश्तों को मजबूत बनाने के लिए कुछ अहम फैसले करेंगे, जिससे आपका बिजनेस अच्छ चल सके। आज आप इन्वेस्टमेंट के मामलों में किसी आर्थिक सलाहकार की मदद ले सकते हैं।

मीन राशि: मीन राशि वालों आज का दिन आपके लिए सुखदुःख रहने वाला है। आज ऑफिस में बॉस आपके काम की तारीफ करेंगे और जुनियर भी आपके कुछ सीखने का प्रयास करेंगे। इस राशि की महिलाओं के लिए आज का दिन खास है, आज आपके पास बिजनेस को आगे बढ़ाने का अच्छ मौका है।

राष्ट्र भक्ति की अलख जगाता दैनिक

राष्ट्रीय गरिमा

राष्ट्र एक वकीला है और हम सब इसके माली

देसी राज की शिक्षा ने मतिहीन नेता बनाए

शंकर शरण

हिन्दू ग्रंथों की निन्दा करने वाले उसे शायद ही पढ़ते हैं। मनुस्मृति के राज्य-शासन संबंधी तीनों अध्याय गंभीर ज्ञान-भंडार हैं। अधिकांश आज भी मूल्यवान। तब सोचें, तीन हजार वर्ष पहले इतना गहन चिंतन विश्व में कहाँ था! तब यहाँ ऐसे शास्त्र रचे गए, जिन की बातें आज भी चमत्कृत करती हैं। निंदक लोग केवल सुनी-सुनाई पर चलते हैं कि उस में 'शूद्रों या स्त्रियों के बारे में कुछ आपत्तिजनक है।' वस्तुतः मनुस्मृति में वैसा भी कुछ नहीं है।. स्वामी दयानन्द सरस्वती ने मनुस्मृति को अपने समाज-सुधार का आधार बनाया था। यदि मनुस्मृति जातिवादी या स्त्री-विरोधी होती, तो वे संपूर्ण भारत में इतना बड़ा आधुनिक, व्यापक प्रभावशाली सुधार आंदोलन चलाने में कैसे सफल हुए होते? प्रायः लगता है, कि अंग्रेजों ने इस देश को अधिक सहानुभूति से समझा था। लोगों की ही नहीं, अपितु यहाँ के ज्ञान, इतिहास, विरासत, धर्म और संस्कृति के प्रति भी सच्ची देख-भाल की प्रवृत्ति उन में थी। यह बात एकबारगी विचित्र लगे, किंतु ठोस पैमानों पर — सामाजिक, आर्थिक, प्रशासनिक, शैक्षिक, सांस्कृतिक एवं व्यवहारिक — परखने से सोचने पर विश्व होना पड़ेगा। शिक्षा का उदाहरण लें। अंग्रेजों ने यहाँ अपने बनाए स्कूलों, कॉलेजों में यूरोप के सर्वश्रेष्ठ ज्ञान से भारतीय बच्चों, युवाओं को शिक्षित किया। साहित्य और दर्शन में महान भारतीय रचनाओं को भी वही स्थान दिया। यह पुराने पुस्तकालयों में रखी उस जमाने की पाठ्य सामग्रियों तथा उस युगीन हमारे विद्वानों के लेखन का माध्यम से भी जाना जा सकता है। पर देशी राज की शिक्षा ने क्या किया? इस ने जल्द ही शिक्षा का राजनीतिकरण, मतवादीकरण कर दिया! पूरे ब्रिटिश राज में शायद ही स्कूलों में कभी ब्रिटिश सम्राटों या वायसरायों की विरुदावली रटने, फैलाने का काम हुआ। देशी राज में अपने चालू नेताओं को दैवी, ज्ञानी, चिंतक, विश्वनेता, आदि बताना नीचे से ऊपर सभी कक्षाओं में एक सामान्य तत्व बन गया। यह प्रवृत्ति शिक्षा के विरुद्ध कुशिक्षा को प्रश्रय देना था। अनजाने होने से उस की हानि कम नहीं हुई! बल्कि फिर उस का प्रतिफलन, विस्तार, आदि अन्य क्षेत्रों में भी होना ही था। जैसे, शिक्षा में सच्चे सिद्धांत पढ़ने के बजाए बैसे मतवादों, विचार पढ़ाना जो उन नेताओं को पसंद थे। या जो उन की अपनी झक थी। वदनुसार, विद्वानों के बदले उन भक्तों और रूढ़ तत्वों को आचार्य, अध्यापक, संचालक बनाना जो उन मतवादों का प्रचार करें। इसी तरह, फिर शोध के नाम पर उन्हीं बातों, आग्रहों, दुराग्रहों की पुष्टि कराने वाले विचार को शोध-विषय बनाकर शुद्ध प्रोपेगंडा को शोध, ज्ञान, शिक्षा, और उच्च-शिक्षा का नाम दे देना। उक्त सभी प्रवृत्तियों को आज विकराल व दयनीय रूप में चारो तरफ देख सकते हैं। बीमारी इतनी व्यापक हो चुकी, कि बीमारी नहीं लगती! मानो जहाँ सभी अंधे हों, वहाँ अंधकार और प्रकाश में नामालुम अंतर रहता है। सो, सचमुच ज्ञान की बातें, ज्ञान पुस्तकें, और सच्चे शिक्षक आज के शैक्षिक बौद्धिक वातावरण में नकू हैं। उन के



लिए कहीं स्थान नहीं। यह भी सरसरी अवलोकन से देखा जा सकता है। वर्तमान मुहावरे में कहें, तो 'जेनरल कैटेगरी' के प्रतिभाशाली विद्यार्थी या अध्यापक विदेशों में जगह ढूँढने के लिए अभिषात हैं। देश में उन के लिए कोई चिन्ता करने वाला नहीं! इस प्रकार, देसी राज को ज्ञान, प्रतिभा, योग्यता, कुशलता तथा इस से होने वाले लाभ, और इन की अनुपस्थिति में होने वाली हानि — दोनों में से किसी का बोध तक नही है! तुलना कीजिए, ब्रिटिश राज की तमाम छात्रवृत्तियों, सम्मानों, प्रोत्साहनों, और पदवियों से। कहीं भी उस में लेशमात्र भी मिलावट, प्रोपेगंडा, भेद-भाव, मिथ्याचार, या दिखावे का संकेत नहीं मिलेगा! इस का प्रत्यक्ष प्रमाण यह भी है कि किसी कट्टर से कट्टर राष्ट्रवादी भारतीय ने अंग्रेज शासकों, प्रशासकों, अधिकारियों पर सामान्य पक्षपात या भ्रष्टाचार का आरोप कभी नहीं लगाया। उन का नियमित कामकाज इतनी पारदर्शिता और गुणवत्ता से चलता था। अतः क्या आश्चर्य कि आज देश के सर्वोच्च नेतागण भी भारतीय ज्ञान-ग्रंथों के बारे में शून्य जानकारी रखते हैं। यदि कोई संस्था सर्वेक्षण करे (जो 'प्यू रीसर्च' जैसी कोई विदेशी ही हो सकती है, देश में अब ऐसी कोई संस्था ही नहीं बची। जो यह करती हो) तो हमारे तमाम मंत्रियों, सांसदों में भारतीय ज्ञान ग्रंथों के पाँच नाम भी बता सकने वाले बिरले ही मिलेंगे। वही देश को शिक्षा, संस्कृति, और विज्ञान, सब के कर्णधार हैं! कहने की जरूरत नहीं कि आम अमश्वत्व की स्थिति में इस हाल का मतलब समझने वाले भी बहुत कम हैं। और जो हैं वे असहाय दर्शक भर। अब इस नये प्रसंग को देखें, जो 'मनुस्मृति' को फिर दो लात लगाने से जुड़ी है। एक महान ज्ञान-ग्रंथ — जिस ने ब्रिटिश राज के दौर में स्वामी दयानन्द और स्वामी विवेकानन्द जैसे महापुरुषों को प्रेरित किया, जिन्होंने देश-विदेश में अनगिनत लोगों को अपनी

सीख से लाभान्वित किया। उस ग्रंथ का स्थान देसी राज में यह है कि हर नेता उसे गाली देकर, या जला कर अपने को देश का कर्णधार समझता है। किसी को उसे पढ़ने की जरूरत नहीं। बस, गाली देना पर्याप्त है। जिस से वह प्रगतिशील, बहुजन-हितैषी, समाज सेवक, आदि कहलाने का हकदार हो जाता है। यह है देसी राज की शिक्षा का नतीजा, जिस में पैदा हुए और पले-बढ़े लोग ही आज देश भर में सत्तासीन हैं। वे न केवल यह दृश्य सहज रूप से देखते हैं, अपितु इसी को प्रोत्साहन देते हैं। मामूली खोजबीन से ऐसे उच्च पदस्थ लोग मिल जाएंगे जो मनुस्मृति को जलाकर, या उसे अपशब्द कह कर ऊपर स्थापित हुए। साथ ही, ऐसे लोग भी मिल जाएंगे जो जटिल विषयों के अच्छे ज्ञाता हैं, इसीलिए कहीं भूखे, बेघर उपेक्षित पड़े हैं। जो किसी मित्रों के अनुदान और सहयोग से जीवन चला रहे हैं। क्योंकि वे उस 'कटेगरी' के हैं जिन की जरूरत देसी राज को नहीं है। वो, देसी राज में महान पुस्तकें शिक्षा से क्रमशः बाहर होती गईं। उन्हें तुच्छ या अप्रासंगिक मान लिया गया। बिना पढ़े। मनुस्मृति की नियमित पढ़सना इसी का उदाहरण है। जबकि यदि शीर्षक हटाकर इसे किन्हीं भी दस समझदार लोगों को पढ़ने को दें, और फिर मतलब लें, तो सभी उसे महान ग्रंथ मानेंगे। अतः निंदक लोग केवल सुनी-सुनाई पर चलते हैं कि उस में 'शूद्रों या स्त्रियों के बारे में कुछ आपत्तिजनक है।' वस्तुतः मनुस्मृति में वैसा भी कुछ नहीं है। यदि होता, तब भी आज के नजरिए से किसी पुरानी पुस्तक में कोई नापसंद बात मिलने पर भी उसे अपमानित करना मुश्क़ता है। इसीलिए 'ओल्ड टेस्टामेंट' या 'कुरान' जैसे प्राचीन ग्रंथों को सम्मान दिया जाता ह। जबकि उस में पगान, आइडोलैटर, काफिर, यानी दूसरे धर्म-विश्वासियों के लिए अत्यंत अपमानजनक बातें लिखी हुई हैं।

राजीव से राहुल तक का सफर भी कम गौरतलब नहीं

हरिशंकर व्यास

हेरों प्रमाण हैं। तारीखों और घटनाओं का वह अंतहीन सिलसिला है जिससे मेरा निष्कर्ष है कि भारत के कम्युनिस्टों ने न केवल देश का समय बिगाड़ा। खुद के अवसर भी गंवाए। लेफ्ट के खाते में राजनीतिक बरबादियां लगातार दर्ज कराईं। बावजूद इसके मेरे मन में कम्युनिस्ट नेताओं के चाल, चेहरे और चरित्र की कसौटी में सम्मान है। खासकर आज सत्ता में संघ-भाजपाइयों के चाल, चेहरे और चरित्र को देखते हुए तो और भी अधिक। उस नाते ई. एम. एस. नंबूदरीपद, ज्योति बसु, इंद्रजीत गुप्त से माणिक सरकार, पिनराई विजयन और वाम संगठनों के प्रकाश करार, सीताराम येचुरी, दीपांकर भट्टाचार्य तक—इन लोगों की निजी सादरी, सहजता और वैचारिक प्रतिबद्धता का जितना सम्मान किया जाए, कम है। कांग्रेस (राहुल) की दीमक है लेफ्ट-2 मगर व्यक्ति की ईमानदारी से विचार और उसके परिणाम सही साबित नहीं होते। भारतीय कम्युनिस्टों का विरोधाभास यही है। निजी जीवन में जितने सादे और प्रतिबद्ध, भारत को पढ़ने में उतनी ही बार गड़बड़। स्वतंत्रता के बाद कम्युनिस्टों ने आजादी को अधूरा माना। कांग्रेस को बुर्जुआ सत्ता कहा। नेहरू को कभी वर्ग-शत्रु की राजनीति में पड़ा और कभी उन्हीं के आसपास घेरेबंदी से उन पर वैचारिक प्रभाव बनाया। नेहरू के आखिरी सालों में कुष्ण मेनन और चीन से भारत की हार का ठीकरा भी फूटा। चीन के सवाल पर ही कम्युनिस्ट विभाजित हुए। दो पार्टियां बनीं। इंदिरा गांधी के दौर में सीपीआई उनके साथ थी। उसका आपातकाल को समर्थन रहा। फिर जनता पार्टी, वी. पी. सिंह, संयुक्त मोर्चा और यूपीए—दिल्ली में सत्ता के गठजोड़ बने तब भी वामपंथी चेहरों, पार्टियों का सरकारों, राष्ट्रीय नैरेटिव और मीडिया में हल्ला रहा। लेकिन एक बात, एक वास्तविकता हमेशा कायम रही। केंद्र सरकार की सत्ता के आसपास विचार, बौद्धिकता और विमर्श की दुनिया में वाम की हैसियत उसकी असल जन हैसियत, पाए गए लेफ्ट वोटों से अक्सर कई गुना बड़ी रही। सोचें, कुष्ण मेनन के प्रभाव और 1962 के अनुभव यानी लेफ्ट से नेहरू ने क्या पाया? कांग्रेस के 1969 के विभाजन के बाद वाम समर्थन और वाम-प्रगतिशील बौद्धिक प्रभाव की ओर बढ़ी इंदिरा गांधी अंततः कहा पहुंचीं? बैंक राष्ट्रीयकरण, प्रिवो पर्स, गरीबी हटाओ, सरकारी उद्योगों—उद्यमों, लाइसेंस-कोटा से कांग्रेस और भारत ने क्या पाया? लगातार फैलते सरकारी दायरे में उल्टे कांग्रेस अपनी पुरानी मध्यमगामी अर्थनीति से लेफ्ट की ओर खिसकती गई। तात्कालिक फायदे की राजनीति में भले इंदिरा को गरीबों की मसीहा की इमेज मिली। कांग्रेस का नया सामाजिक आधार बना। मगर उसी के साथ सरकार अर्थव्यवस्था और नागरिक जीवन की सर्वशक्तिमान माई-बाप बनती गई। ऐसे ही इंदिरा गांधी के समय विश्वविद्यालयों, इतिहास, संस्कृति, अकादमिक संस्थानों, मीडिया और दिल्ली के नीति-विमर्श में लेफ्ट का नया प्रगतिशील प्रतिष्ठान बना। सही है, उसमें बैठे सभी लोग कम्युनिस्ट नहीं थे। लेकिन आधुनिक, वैज्ञानिक और प्रगतिशील कहलाने की खास भाषा जरूर सभी चेहरों-मटाधोशों—शिक्षा मंत्री, उपकुलपतियों, कला-साहित्य-संस्कृति आदि क्षेत्रों में—की थी। उस भाषा, उस सोच में धर्म को



सार्वजनिक जीवन में लेकर चलने वाला हिंदू आसानी से रूढ़िवादी करार दिया जाता। जबकि धार्मिक अल्पसंख्यक की सामुदायिक पहचान की रक्षा सेकुलर राज्य का दायित्व। जाति पर बात करना प्रगतिशीलता, वहीं सनातनी धर्म और सभ्यता पर बात करते हुए, सफाई देती हुई झिझक। इसलिए 'लेफ्ट' का अर्थ, उसके जुगालीबाजों का दायरा बहुत विस्तृत रहा है। बात केवल सीपीआई, सीपीएम या सीपीआई-एमएल का पार्टी कार्ड रखने वालों की ही नहीं है। समाजवादी कम्युनिस्ट नहीं थे। लोहियावादी और मार्क्सवादी एक नहीं थे। आंबेडकरवादी भी कम्युनिस्ट नहीं। एनबीओ एक्टिविस्ट और अधिकारवादी नागरिक समाज को भी कम्युनिस्ट कहना गलत होगा। इन सबके आसपी झगड़े और वैचारिक फर्क गहरे हैं। लेकिन समय के साथ लुप्तियंस दिल्ली में इन धाराओं के मेल से एक व्यापक वाम-प्रगतिशील सत्ता-बौद्धिक मानस की दर्बगी बनी। समाज को वर्ग, जाति, लिंग, अल्पसंख्यक-बहुसंख्यक और उत्पीड़क-उत्पीड़ित के खांचों से देखने की प्रवृत्ति पूरे देश में पसरती गई। यही मेरे 'लेफ्ट' के आशय का व्यापक वैचारिक खमीर है। मगर कमाल या त्रासदी देखिए। लेफ्ट का रौब, हल्ला जैसे-जैसे बढ़ा, वैसे-वैसे कम्युनिस्टों, वामपंथियों, समाजवादियों की चुनाबी और वैचारिक हैसियत जीरो होती गई। वोट में सिकुड़ते गए, लेकिन उनकी बनाई भाषा, जुमलों के फतवे बढ़ते गए। एक वक्त था जब संसद में दर्जनों सांसद थे। संसद में कांग्रेस के बाद सीपीआई नंबर दो की पार्टी। बंगाल, केरल, त्रिपुरा में सरकारें। ट्रेड यूनियनों में दबदबा। विश्वविद्यालयों में प्रभाव। संरचित कम्युनिस्ट आंदोलन कभी राष्ट्रीय राजनीति की बड़ी शक्ति था। पश्चिम बंगाल में चौंतीस साल सरकार थी। पर आज वहां नामलेवा नहीं है। ऐसी ही त्रिपुरा की दशा हुई। लोकसभा में सीटें और वोट सिकुड़ते गए। आज राजनीति में वाम हाशिये से भी बाहर है। मगर उससे निकली व्यापक प्रगतिशील शब्दावली, विमर्श के शब्द गैर-भाजपाई राजनीति की मुख्य धारा हुए। जैसे सामाजिक न्याय, हिस्सेदारी, प्रतिनिधित्व, अल्पसंख्यक अधिकार, बहुसंख्यकवाद, पितृसत्ता, उत्पीड़क-उत्पीड़ित। यानी वोट में हार, शब्दों की जुगाली से राष्ट्रीय मीडिया की पहचान! मेरा मानना है

कि सीपीआईएम, कम्युनिस्टों की सबसे बड़ी राजनीतिक सफलता पश्चिम बंगाल पर चौंतीस साल राज या केरल में सरकारें बनाने की नहीं है। उससे बड़ी सफलता अपने वोट से कई गुना बड़ा दिल्ली में वैचारिक प्रभाव पैदा करना था। विश्वविद्यालय से मीडिया तक। संस्कृति से इतिहास तक। सरकार की सलाहकारी दुनिया से कांग्रेस की राजनीतिक भाषा तक। चुनाव वे हारते गए, लेकिन भारत को देखने का उनका चश्मा अलग-अलग रूपों में कांग्रेस और गैर-भाजपाई दलों में पुखा होता गया। मेरा खांटी कांग्रेसियों—वसंतदादा पाटिल, ए. आर. अंतुले, माखनलाल फोतेदार, आर. के. धवन, कमलापाति पिठाठी से अहमद पटेल, अंबिका सोनी, सीरीश शर्मा तक के जरिए कांग्रेस में विचार, सत्ता और संगठन चलाने वाले घेरे से गहरा जानने-समझने का रिश्ता रहा है। उसी तरह राष्ट्रीय राजनीति के सतरंगी विचारों और चेहरों की असलियत मैंने शरद यादव, लालू यादव, गोपी अरोड़ा, मणिशंकर अय्यर, सीताराम येचुरी जैसे लोगों से हुई गपशप में भी जानी है। इसलिए मेरे लिए दिल्ली केवल सरकारों और फाईलों का इतिहास नहीं है। वह उन लोगों, बैठकों, सलाहों और विचारों का भी इतिहास है जिनसे सत्ता का मन बनता था, बना होता था, बिगड़ता था। उसी अनुभव से मेरा निष्कर्ष है—मोरारजी देसाई आए, चरण सिंह आए, चंद्रशेखर आए, देवगौड़ा और गुजराल आए, नरसिंह राव आए, अटल बिहारी वाजपेयी और मनमोहन सिंह आए। सरकारें बदलती रहीं। गठबंधन बदलते रहे। चेहरे, पार्टियां और गैरे बदले। लेकिन दिल्ली के सत्ता-बौद्धिक संसार में कम्युनिस्ट-समाजवादी विचार, प्रगतिशील जमात और राष्ट्रीय मीडिया में उसकी गूंज स्थायी खमीर की तरह बनी रही। आटा किसी का रहा हो, खमीर लेफ्ट ही रहा। जनता पार्टी आई तो आटा-परात बदली। वी. पी. सिंह आए तो फिर बदला। संयुक्त मोर्चा आया तो प्रधानमंत्री तक बदलते रहे। नरसिंह राव ने अर्थव्यवस्था की दिशा बदल दी। 1991 के बाद बाजार खुला, निजी पूंजी का दायरा बढ़ा, लाइसेंस-परमिट राज टूटना शुरू हुआ। बावजूद इसके आर्थिक नीति बदलने का अर्थ यह नहीं था कि दिल्ली का सामाजिक-सांस्कृतिक शब्दकोश भी उसी गति से बदला हो। फिर

अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार आई। पहली बार दिल्ली में दूसरा वैचारिक परिवार पूरी तरह सत्ता में बैठ। मगर सरकार बदलने से विश्वविद्यालय, मीडिया, संस्कृति और बौद्धिक प्रतिष्ठान तोतारांत नहीं बदलते हैं! सत्ता भाजपा की थी, लेकिन दिल्ली की स्थापित बौद्धिक भाषा का बड़ा हिस्सा पुराना बना रहा। फिर मनमोहन सिंह की यूपीए सरकार आई और कहानी ने लगभग पूरा चक्र पूरा किया। वामपंथ स्वयं सरकार में शामिल हुए बिना सरकार के अस्तित्व का महत्वपूर्ण खंभा था। दूसरी तरफ सोनिया गांधी की राष्ट्रीय सलाहकार परिषद—एनएससी—ने अधिकार-अधारित राजनीति को नया संस्थागत रूप दिया। नतीजा था—रोजगार का अधिकार। सूचना का अधिकार। भोजन का अधिकार। वन अधिकार आदि, आदि। इनमें कई अधिकार अपने आप में जरूरी, न्यायसंगत और ऐतिहासिक बनते हैं। भला गरीब को रोजगार की सुरक्षा क्यों न मिले? नागरिक को सूचना क्यों न मिले? भूखे को भोजन क्यों न मिले? आदिवासी के वन अधिकार क्यों न हों? मेरा प्रश्न इन अधिकारों की जरूरत से नहीं है। बल्कि सवाल उस राजनीति का है जिसमें धीरे-धीरे नागरिक और सरकार का पूरा रिश्ता 'मुझे राज्य से क्या मिलेगा' में सिमटता है और नागरिक भीड़ में कनवर्ट हो कतार में लगा भिखारी होता है। वोट और राजनीति लेने-देने का सौदा, मंडी बनती है। नेहरू के समाजवादी राज्य ने सरकार को उत्पादक और माई-बाप बनाया था। इंदिरा गांधी ने 'गरीबी हटाओ' में गरीब को सीधे सत्ता की वोट राजनीति से जोड़ा। मंडल के बाद राज्य अवसर और हिस्सेदारी बांटने वाला हुआ। वही सोनिया गांधी के एनएससी के दौर में अधिकार राजनीति की केंद्रीय नैतिक भाषा बना। फिर नरेंद्र मोदी आए। और यहीं इतिहास का सबसे मजबूत उलटफेर है। जिस भाजपा ने दशकों कांग्रेस के समाजवाद, सेकुलरवाद और वोट बैंक की राजनीति को कोसा, उसने सत्ता में आकर माई-बाप राज्य को खत्म नहीं किया। उसने दो तकनीक, आधार, बैंक खाते, मोबाइल और सीधे हस्तांतरण की क्षमता देकर कहीं अधिक शक्तिशाली बना दिया। कांग्रेस ने अधिकार दिया, मोदी ने खाते में पैसा पहुंचाया। कांग्रेस से कल्याणकारी राज्य बनाया, मोदी ने उसे लाभार्थी राज्य बनाया। राशन, गैस, मकान, शौचालय, किसान सम्मान निधि और सीधे लाभ हस्तांतरण के साथ सरकार और नागरिक के बीच नेता का एक नया निजी रिश्ता बना। पहले आदमी सरकार से अधिकार मांगता था। अब उसके मोबाइल पर संदेश आता है कि पैसा पहुंच गया। लाभ योजना का है, लेकिन राजनीतिक स्मृति में देने वाला दानदत्ता नेता है। यानी नरेंद्र मोदी ने इस परंपरा को तोड़ा नहीं। उसे उसकी चरम परिणति तक पहुंचाया। मैंने संघ के एक पदाधिकारी, दत्तात्रेय होसबाले, को यह भाषण करते सुना है कि आरएसएस के कई आइडिया लेफ्टिस्ट हैं। हिंदुत्व न लेफ्ट है, न दक्षिणपंथी। इसीलिए मैंने इस सीरीज को शुरू करते हुए पहले पैरा में लिखा था कि संघ ऐसा लुढ़कता लोट्टा है जिसका न गांधी के राम से नाता है, न दूसरे छोर के सावरकर और मदनमोहन मालवीय के हिंदुत्व और हिंदू समझ से। कुल मिलाकर वैचारिक रूप से एक-दूसरे की दुश्मन दिखाई देने वाली कांग्रेस और भाजपा इस मामले में स्वतंत्र भारत के उसी माई-बाप राज्य की अलग-अलग मॉजिलें हैं।

सेठ पुरुषोत्तमदास पूना की सरस्वती पाठशाला का मुआयना करने के बाद बाहर निकले तो एक लड़की ने दौड़कर उनका दामन पकड़ लिया। सेठ जी रुक गये और मुहब्बत से उसकी तरफ देखकर पूछ—क्या नाम है?

लड़की ने जवाब दिया—रोहिणी।

सेठ जी ने उसे गोद में उठा लिया और बोले—तुम्हें कुछ इनाम मिला?

लड़की ने उनकी तरफ बच्चों जैसी गंभीरता से देखकर कहा—तुम चले जाते हो, मुझे रोना आता है, मुझे भी साथ लेते चलो।

सेठजी ने हँसकर कहा—मुझे बड़ी दूर जाना है, तुम कैसे चालोगी?

रोहिणी ने प्यार से उनकी गर्दन में हाथ डाल दिये और बोली—जहाँ तुम जाओगे वहीं मैं भी चलूँगी। मैं तुम्हारी बेटी हूँगी।

मदरसे के अफसर ने आगे बढ़कर कहा—इसका बाप साल भर हुआ नही रहा। माँ कपड़े सीती है, बड़ी मुश्किल से गुजर होती है।

सेठ जी के स्वभाव में करुणा बहुत थी। यह सुनकर उनकी आँखें भर आयीं। उस भोली प्रार्थना में वह दर्द था जो पत्थर-से दिल को पिघला सकता है। बेकसी और यतीमी को इससे ज्यादा दर्दनाक ढंग से जाहिर कना नामुमकिन था।

उन्होंने सोचा—इस नन्हें-से दिल में न जाने क्या अरमान होंगे। और लड़कियाँ अपने खिलौने दिखाकर कहती होंगी, यह मेरे बाप ने दिया है। वह अपने बाप के साथ मदरसे आती होंगी, उसके साथ मेलों में जाती होंगी और उनकी दिलचस्पियों का जिक्र करती होंगी। यह सब बातें सुन-सुनकर इस भोली लड़की को भी ख्वाहिश होती होगी कि मेरे बाप होता। माँ की मुहब्बत में गहराई और आत्मिकता होती है जिसे बच्चे समझ नहीं सकते। बाप की मुहब्बत में खुशी और चाव होता है जिसे बच्चे खूब समझते हैं।

सेठ जी ने रोहिणी को प्यार से गले लगा लिया और बोले—अच्छा, मैं तुम्हें अपनी बेटी बनाऊँगा। लेकिन खूब जी लगाकर पढ़ना। अब छुट्टी का वक्त आ गया है, मेरे साथ आओ, तुम्हारे घर पहुँचा दूँ।

यह कहकर उन्होंने रोहिणी को अपनी मोटरकार में बिठा लिया। रोहिणी ने बड़े इत्मीनान और गर्व से अपनी सहेलियों की तरफ देखा। उसकी बड़ी-बड़ी आँखें खुशी से चमक रही थीं और चेहरा चाँदनी रात की तरह खिला हुआ था।

सेठ ने रोहिणी को बाजार की खूब सैर करायी और कुछ उसकी पसन्द से, कुछ अपनी पसन्द से बहुत-सी चीजें खरीदीं, यहाँ तक कि रोहिणी बातें करते-करते कुछ थक-सी गयी और खामोश हो गई। उसने इतनी चीजें देखीं और इतनी बातें सुनीं कि उसका जी भर गया। शाम होते-होते रोहिणी के घर पहुँचे और मोटरकार से उतरकर रोहिणी को अब कुछ आराम मिला। दरवाजा बन्द था। उसकी माँ किसी ग्राहक के घर कपड़े देने गयी थी। रोहिणी ने अपने तोहफों को उलटना-पलटना शुरू किया—खूबसूरत रबड़ के खिलौने, चीनी की गुड़िया जरा दबाने से चूँ-चूँ करने लगतीं और रोहिणी यह प्यार संगीत सुनकर फूली न समाती थी। रेशमी कपड़े और रंग-बिरंगी साड़ियों की कई बण्डल थे लेकिन मखमली बूटे की गुलकारियों ने उसे खूब लुभाया था। उसे उन चीजों के पाने की जितनी खुशी थी, उससे ज्यादा उन्हें अपनी सहेलियों को दिखाने की बेचैनी थी। सुन्दरी के जूते अच्छे सही लेकिन उनमें ऐसे फूल कहीं हैं। ऐसी गुड़िया उसने कभी देखी भी न होंगी। इन खयालों से उसके दिल में उमंग भर आयी और वह अपनी मोहिनी आवाज में एक गीत गाने लगी। सेठ जी दरवाजे पर खड़े इन पवित्र दृश्य का हार्दिक आनन्द उठा रहे थे। इतने में रोहिणी की माँ रुक्मिणी कपड़ों की एक पोटली लिये हुए आती दिखायी दी। रोहिणी ने खुशी से पागल होकर एक छल्लाँग भरी और उसके पैरों से लिपट गयी। रुक्मिणी का चेहरा पीला था, आँखों में हसरत और बेकसी छिपी हुई थी, गुप्त चिंता का सजीव चित्र मालूम होती थी, जिसके लिए जिंदगी में कोई सहारा नहीं।

मगर रोहिणी को जब उसने गोद में उठाकर प्यार से चूमा मो जरा देर के लिए उसकी आँखों में उन्मीद और जिंदगी की झलक दिखायी दी। मुरझाया हुआ फूल खिल गया। बोली—आज तू इतनी देर तक कहीं रही, मैं तुझे ढूँढ़ने पाठशाला गयी थी।

रोहिणी ने हुमककर कहा—मैं मोटरकार पर बैठकर बाजार गयी थी। वहाँ से बहुत अच्छी-अच्छी चीजें लायी हूँ, वह देखो कौन खड़ा है?

माँ ने सेठ जी की तरफ ताका और लजाकर सिर झुका लिया।

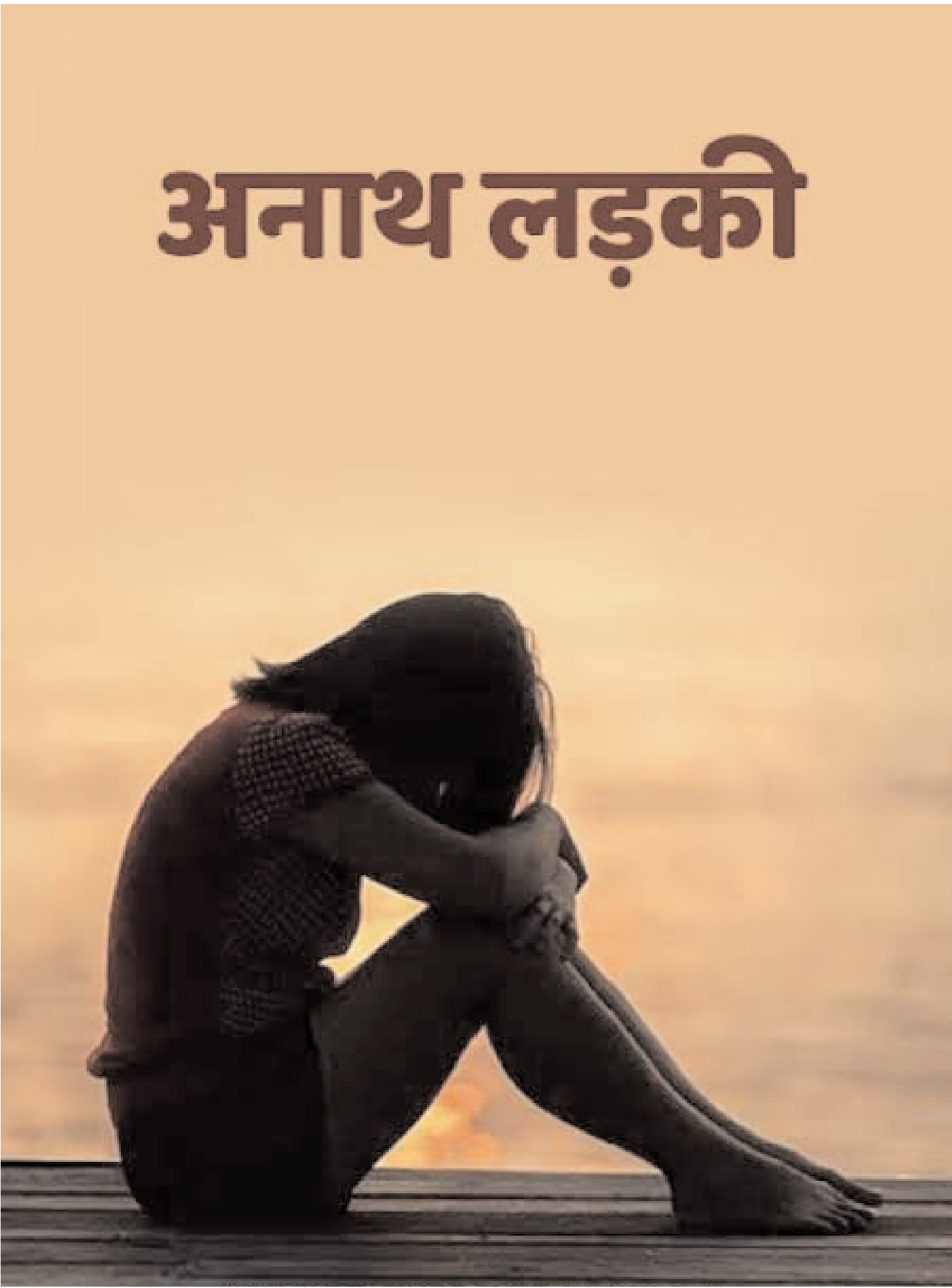
ब्रामदे में पहुँचते ही रोहिणी माँ की गोद से उतरकर सेठजी के पास गयी और अपनी माँ को यकीन दिलाने के लिए भोलेपन से बोली—क्यों, तुम मेरे बाप हो न?

सेठ जी ने उसे प्यार करके कहा—हाँ, तुम मेरी प्यारी बेटी हो।

रोहिणी ने उनसे मुंह की तरफ याचना-भरी आँखों से देखकर कहा—अब तुम रोज यहीं रहा करोगे?

सेठ जी ने उसके बाल सुलझाकर जवाब दिया—मैं यहाँ रहूँगा तो काम कौन करेगा? मैं कभी-कभी तुम्हें देखने आया करूँगा, लेकिन वहाँ से तुम्हारे लिए अच्छी-अच्छी चीजें भेजूँगा।

रोहिणी कुछ उदास-सी हो गयी। इतने में उसकी माँ ने मकान का दरवाजा खोला ओर बड़ी फुर्ती से मैले बिछावन और फटे हुए कपड़े समेट कर काने में डाल दिये कि कहीं सेठ जी की निगाह उन पर न पड़ जाए। यह स्वाभिमान स्त्रियों की खास अपनी चीज है।



रुक्मिणी अब इस सोच में पड़ी थी कि मैं इनकी क्या खातिर-तवाजो करूँ। उसने सेठ जी का नाम सुना था, उसका पति हमेशा उनकी बड़ाई किया करता था। वह उनकी दया और उदारता की चर्चाएँ अनेकों बार सुन चुकी थी। वह उन्हें अपने मन का देवता समझा कतरी थी, उसे क्या उमीद थी कि कभी उसका घर भी उसके कदमों से रोशन होगा। लेकिन आज जब वह शुभ दिन संयोग से आया तो वह इस काबिल भी नहीं कि उन्हें बैठने के लिए एक मोढ़ा दे सके। घर में पान और इलायची भी नहीं। वह अपने आँसुओं को किसी तरह न रोक सकी।

आखिर जब अंधेरा हो गया और पास के ठाकुरद्वारे से घण्टों और नगाड़ों की आवाजें आने लगीं तो उन्होंने जरा ऊँची आवाज में कहा—बाईजी, अब मैं जाता हूँ। मुझे अभी यहाँ बहुत काम करना है। मेरी रोहिणी को कोई तकलीफ न हो। मुझे जब मौका मिलेगा, उसे देखने आऊँगा। उसके पालने-पोसने का काम मेरा है और मैं उसे बहुत खुशी से पूरा करूँगा। उसके लिए अब तुम कोई फिक्क मत करो। मैंने उसका वजीफा बाँध दिया है और यह उसकी पहली किस्त है।

यह कहकर उन्होंने अपना खूबसूरत बटुआ निकाला और रुक्मिणी के सामने रख दिया। गरीब औरत की आँखें में आँसू जारी थे। उसका जी बरबस चाहता था कि उसके पैरों को पकड़कर खूब रोये। आज बहुत दिनों के बाद एक सच्चे हमदर्द की आवाज उसके मन में आयी थी।

जब सेठ जी चले तो उसने दोनों हाथों से प्रणाम किया। उसके हृदय की गहराइयों से प्रार्थना निकली—आपने एक बेबस पर दया की है, ईश्वर आपको इसका बदला दे।

दूसरे दिन रोहिणी पाठशाला गई तो उसकी बाँकी सज-धज आँखों में खुबी जाती थी। उस्तानियों ने उसे बारी-बारी प्यार किया और उसकी सहेलियाँ उसकी एक-एक चीज को आश्चर्य से देखती और ललचाती थी। अच्छे कपड़ों से कुछ स्वाभिमान का अनुभव होता है। आज रोहिणी वह गरीब लड़की न रही जो दूसरों की तरफ विवश नेत्रों से देखा करती थी। आज उसकी एक-एक क्रिया से शैशवोचित गर्व और चंचलता टपकती थी और उसकी जवान एक दम के लिए भी न रुकती थी। कभी मोटर की तेजी का जिक्र था कभी बाजार की दिलचस्पियों का बयान, कभी अपनी गुर्दियों के कुशल-मंगल की चर्चा थी और कभी अपने बाप की मुहब्बत की दास्तान। दिल था कि उमंगों से भरा हुआ था।

एक महीने बाद सेठ पुरुषोत्तमदास ने रोहिणी के लिए फिर तोहफे और रुपये रवाना किये। बेचारी विधवा को उनकी कृपा से जीविका की

राष्ट्र भक्ति की अलख जगता दैनिक

राष्ट्रीय गरिमा

राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

अनाथ लड़की

राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

मोपाल, शनिवार 19 सितम्बर 2026

www.rashtriyagarima.com

पॉक्ति की ओर नजर दौड़ाई। चुनने वाली आँख रोहिणी पर पड़ी और ठहर गई। उसकी छाती धड़कने लगी। लेकिन उत्सव के सभापति के आदेश का पालन आवश्यक था। वह सर झुकाये हुए मेज के पास आयी और कॉपते हाथों से हार को उठा लिया। एक क्षण के लिए दोनों की आँखें मिलीं और रोहिणी ने नरोत्तमदास के गले में हार डाल दिया।

दूसरे दिन सरस्वती पाठशाला के मेहमान विदा हुए लेकिन कौशल्या देवी ने रोहिणी को न जाने दिया। बोली—अभी तुम्हें देखने से जी नहीं भरा, तुम्हें यहाँ एक हफ्ता रहना होगा। आखिर मैं भी तो तुम्हारी माँ हूँ। एक माँ से इतना प्यार और दूसरी माँ से इतना अलगाव।

रोहिणी कुछ जवाब न दे सकी।

यह सारा हफ्ता कौशल्या देवी ने उसकी विदाई की तैयारियों में खर्च किया। सातवें दिन उसे विदा करने के लिए स्टेशन तक आयीं। चलते वक्त उससे गले मिलीं और बहुत कोशिश करने पर भी आँसुओं को न रोक सकीं। नरोत्तमदास भी आये थे। उनका चेहरा उदास था। कौशल्या ने उनकी तरफ सहानुभूतिपूर्ण आँखों से देखकर कहा—मुझे यह तो ख्याल ही न रहा, रोहिणी क्या यहाँ से पूना तक अकेली जायेगी? क्या हर्ज है, तुम्हीं चले जाओ, शाम की गाड़ी से लौट आना।

नरोत्तमदास के चेहरे पर खुशी की लहर दौड़ गयी, जो इन शब्दों में न छिप सकी—अच्छा, मैं ही चला जाऊँगा। वह इस फिक्क में थे कि देखें बिदाई की बातचीत का मौका भी मिलता है या नहीं। अब वह खूब जी भरकर अपना दर्द दिल सुनायेंगे और मुमकिन हुआ तो उस लाज-संकोच को, जो उदासीनता के परदे में छिपी हुई है, मिटा देंगे।

रुक्मिणी को अब रोहिणी की शादी की फिक्क पैदा हुई। पड़ोस की औरतों में इसकी चर्चा होने लगी थी। लड़की इतनी सयानी हो गयी है, अब क्या बुढ़ापे में ब्याह होगा? कई जगह से बात आयी, उनमें कुछ बड़े प्रतिष्ठित घराने थे। लेकिन जब रुक्मिणी उन पैमानों को सेठजी के पास भेजती तो वे यही जवाब देते कि मैं खुद फिक्क में हूँ। रुक्मिणी को उनकी यह टाल-मटोल बुरी मालूम होती थी।

रोहिणी को बम्बई से लौटे महीना भर हो चुका था। एक दिन वह पाठशाला से लौटी तो उसे अम्मा की चारपाई पर एक खत पड़ा हुआ मिला। रोहिणी पढ़ने लगी, लिखा था—बहन, जब से मैंने तुम्हारी लड़की को बम्बई में देखा है, मैं उस पर रीझ गई हूँ। अब उसके बगैर मुझे चैन नहीं है। क्या मेरा ऐसा भाग्य होगा कि वह मेरी बहू बन सके? मैं गरीब हूँ लेकिन मैंने सेठ जी को राजी कर लिया है। तुम भी मेरी यह विनती कबूल करो। मैं तुम्हारी लड़की को चाहे फूलों की सेज पर न सुला सकूँ, लेकिन इस घर का एक-एक आदमी उसे आँखों की पुतली बनाकर रखेगा। अब रहा लड़का। माँ के मुँह से लड़के का बखान कुछ अच्छा नहीं मालूम होता। लेकिन यह कह सकती हूँ कि परमात्मा ने यह जोड़ी अपनी हाथों बनायी है। सूरत में, स्वभाव में, विद्या में, हर दृष्टि से वह रोहिणी के योग्य है। तुम जैसे चाहे अपना इत्मीनान कर सकती हो। जवाब जल्द देना और ज्यादा क्या लिखूँ। नीचे थोड़े-से शब्दों में सेठजी ने उस पैगाम की सिफारिश की थी।

रोहिणी गालों पर हाथ रखकर सोचने लगी। नरोत्तमदास की तस्वीर उसकी आँखों के सामने आ खड़ी हुई। उनकी वह प्रेम की बातें, जिनका सिलसिला बम्बई से पूना तक नहीं टूटा था, कानों में गूँजने लगीं। उसने एक ठण्डी साँस ली और उदास होकर चारपाई पर लेट गई।

सरस्वती पाठशाला में एक बार फिर सजावट और सफाई के दृश्य दिखाई दे रहे हैं। आज रोहिणी की शादी का शुभ दिन। शाम का वक्त, बसन्त का सुहाना मौसम। पाठशाला के दारो-दीवार मुस्करा रहे हैं और हरा-भरा बगीचा फूला नहीं समाता।

चन्द्रमा अपनी बारात लेकर पूरब की तरफ से निकला। उसी वक्त मंगलाचरण का सुहाना राग उस रूपहली चाँदनी और हल्के-हल्के हवा के झोकों में लहरें मारने लगा। दूल्हा आया, उसे देखते ही लोग हैरत में आ गए। यह नरोत्तमदास थे।

दूल्हा मण्डप के नीचे गया। रोहिणी की माँ अपने को रोक न सकी, उसी वक्त जाकर सेठ जी के पैर पर गिर पड़ी। रोहिणी की आँखों से प्रेम और आन्दद के आँसू बहने लगे।

मण्डप के नीचे हवन-कुण्ड बना था। हवन शुरू हुआ, खुशबू की लोपेटें हवा में उठीं और सारा मैदान महक गया। लोगों के दिलो-दिमाग में ताजगी की उमंग पैदा हुई।

फिर संस्कार की बारी आई। दूल्हा और दुल्हन ने आपस में हमदर्दी; जिम्मेदारी और वफादारी के पवित्र शब्द अपनी जवानों से कहे। विवाह की वह मुबारक जंजीर गले में पड़ी जिसमें वजन है, सखी है, पाबन्दियाँ हैं लेकिन वजन के साथ सुख और पाबन्दियों के साथ विश्वास है। दोनों दिलों में उस वक्त एक नयी, बलवान, आत्मिक शक्ति की अनुभूति हो रही थी।

जब शादी की रस्में खत्म हो गयीं तो नाच-गाने की मजलिस का दौर आया। मोहक गीत गूँजने लगे। सेठ जी थककर चूर हो गए थे। जरा दम लेने के लिए बागीचे में जाकर एक बेंच पर बैठ गये। ठण्डी-ठण्डी हवा आ रही आ रही थी। एक नशा-सा पैदा करने वाली शान्ति चारों तरफ छायी हुई थी। उसी वक्त रोहिणी उनके पास आयी और उनके पैरों से लिपट गयी। सेठ जी ने उसे उठाकर गले से लगा लिया और हँसकर बोले—क्यों, अब तो तुम मेरी अपनी बेटी हो गयीं?



एशियन खेल : भारतीय महिला टीम ने जापान को 8 विकेट से हराकर सेमीफाइनल में किया प्रवेश



निशिन (जापान),। भारतीय महिला क्रिकेट टीम ने एशियन खेलों में अपने अभियान की शानदार शुरुआत करते हुए शुक्रवार को जापान को 8 विकेट से हराकर सेमीफाइनल में प्रवेश किया, जहां भारतीय टीम का समाना बांग्लादेश से होगा। रविवार सुबह (स्थानीय समयानुसार) पहले सेमीफाइनल में पाकिस्तान का मुकाबला श्रीलंका से होगा, और उसके बाद दोपहर में भारत का मुकाबला बांग्लादेश से होगा। जापान के खिलाफ मैच में भारतीय कप्तान हरमनप्रीत कौर ने टॉस जीतकर पहले

गेंदबाजी करने का फैसला किया। जापान की टीम 19.5 ओवरों में केवल 57 रनों पर सिमट गई। जापान की तरफ से अयाका काटो-स्टेफोर्ड ने 47 गेंदों पर सर्वाधिक 25 रन बनाए, इस दौरान उन्होंने 2 चौके लगाए। स्टेफोर्ड के अलावा हारुना इवासाकी ने 22 गेंदों पर 1 चौके की बदौलत 10 रन बनाए। इन दोनों के अलावा कोई भी जापानी बल्लेबाज दहाई के स्कोर तक नहीं पहुंचा। जापान ने अपनी पूरी पारी में केवल तीन चौके लगाए। भारत की तरफ से श्री चरणपी ने 4, शेफाली वर्मा ने 2, दीप्ति शर्मा और श्रेयांका पाटिल ने

1-1 विकेट लियाए जबकि दो बल्लेबाज रन आउट हुईं। 58 रनों के लक्ष्य का पीछा करने उतरी भारतीय टीम को शेफाली वर्मा ने तेज शुरुआत दिलाई और पहले ही ओवर में 4 चौके जड़ दिये। हालांकि दूसरे ओवर में नानोहा यासुमोटो ने जी.कमालिनी (00) को पवेलियन भेज भारत को पहला झटका दिया। उन्होंने दूसरे ओवर में कोई रन नहीं दिया और कमालिनी का विकेट लिया। इसके बाद बल्लेबाजी करने आई भारती फूलमाली भी कुछ खास नहीं कर सकीं और अयाका काटो-स्टेफोर्ड का शिकार बनीं। भारती ने 6 रन बनाए।

हालांकि दूसरी तरफ से शेफाली ने आक्रमक बल्लेबाजी जारी रखी और पांचवें ओवर की आखिरी गेंद पर छक्का लगाकर भारतीय टीम को 8 विकेट से आसान जीत दिलाई। शेफाली ने 15 गेंदों पर नाबाद 40 रन बनाए। इस दौरान उन्होंने 6 चौके और 2 छक्के लगाए, ऋद्धा घोष ने उनका अच्छा साथ दिया। ऋद्धा 6 गेंदों पर 2 चौकों की बदौलत 12 रन बनाकर नाबाद लौटीं। जापान की ओर से अयाका काटो-स्टेफोर्ड और नानोहा यासुमोटो ने 1-1 विकेट लिया। भारतीय टीम अब सेमीफाइनल में रविवार को बांग्लादेश से भिड़ेगी, जबकि इसी दिन पहले सेमीफाइनल में पाकिस्तान का सामना श्रीलंका से होगा।

नए कोच जॉर्ज जीसस की पहली पुर्तगाल टीम में शामिल हुए क्रिस्टियानो रोनाल्डो

लिस्बन (क्रिस्टियानो रोनाल्डो को नए मुख्य कोच जॉर्ज जीसस के नेतृत्व में पुर्तगाल की पहली टीम में शामिल किया गया है। 41 वर्षीय रोनाल्डो आगामी यूईएफए नेशंस लीग मुकाबलों के लिए टीम में जगह बनाने में सफल रहे हैं और कप्तान की भूमिका में बने रहेंगे। रोनाल्डो ने इस गर्मी में होने वाले फीफा विश्व कप को अपना आखिरी विश्व कप बताया था, लेकिन उन्होंने अभी अंतरराष्ट्रीय फुटबॉल से संन्यास लेने की तारीख स्पष्ट नहीं की है। 2028 यूरोपीय चैंपियनशिप के दौरान उनकी उम्र 43 वर्ष होगी। जॉर्ज जीसस के पुर्तगाल का मुख्य कोच बनने के बाद घोषित यह पहली टीम है। जीसस ने रॉबर्टो मार्टिनेज के पद छोड़ने के बाद जिम्मेदारी संभाली है। 2026 फीफा विश्व कप के अंतिम-16 मुकाबले में स्पेन के हाथों पुर्तगाल की 0-1 की हार के बाद मार्टिनेज ने पद छोड़ दिया था। जीसस इससे पहले सऊदी अरब के क्लब अल-नस्र में रोनाल्डो को कोच कर चुके हैं। दोनों ने पिछले सत्र

में क्लब के साथ लीग खिताब जीता था। 72 वर्षीय जीसस को पुर्तगाल में लंबे कोचिंग अनुभव के लिए जाना जाता है। वह इससे पहले बेनफिका और स्पोर्टिंग लिस्बन जैसे क्लबों की कप्तान संभाल चुके हैं। पांच बार के बेलन डी'ओर विजेता रोनाल्डो पुरुष अंतरराष्ट्रीय फुटबॉल में 146 गोल के साथ सर्वाधिक गोल करने वाले खिलाड़ी हैं। उन्होंने 2016 में पुर्तगाल को यूरोपीय चैंपियनशिप का खिताब दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी और इसके बाद भी वह राष्ट्रीय टीम के प्रमुख खिलाड़ियों में बने हुए हैं। पुर्तगाल अपने नेशंस लीग अभियान की शुरुआत 24 सितंबर को घरेलू मैदान पर वेल्स के खिलाफ करेगा। इसके तीन दिन बाद टीम नॉर्वे के खिलाफ उसके मैदान पर उतरेगी। इसके बाद पुर्तगाल 1 अक्टूबर को डेनमार्क के खिलाफ उसके घरेलू मैदान पर खेलेगा, जबकि 4 अक्टूबर को नॉर्वे की मेजबानी करेगा।

राष्ट्र भक्ति की अलख जगाता दैनिक

राष्ट्रीय गरिमा



राष्ट्र एक वगीचा है और हम सब इसके माली

एशियाई खेल: मनु भाकर और तजिंदरपाल सिंह तूर होंगे उद्घाटन समारोह में भारत के ध्वजवाहक



नई दिल्ली। जापान के आइची-नागोया में शनिवार को होने वाले एशियाई खेलों के उद्घाटन समारोह में निशानेबाज मनु भाकर और गोला फेंक खिलाड़ी तजिंदरपाल सिंह तूर भारत के ध्वजवाहक होंगे। एशियाई खेलों के 20वें संस्करण में 500 से अधिक भारतीय खिलाड़ी 37 खेलों में हिस्सा लेंगे। प्रतियोगिता का समापन 4 अक्टूबर को होगा। भारत के शेफ-डी-मिशन सहदेव यादव ने एक बयान में कहा, मनु भाकर ध्वजवाहकों में से एक होंगी। इसके बाद भारतीय एथलेटिक्स महासंघ ने तजिंदरपाल सिंह तूर को दूसरा ध्वजवाहक

बनाए जाने की पुष्टि की। 24 वर्षीय मनु भाकर दो बार की ओलंपिक पदक विजेता हैं। वह जापान में 10 मीटर एयर पिस्टल और 25 मीटर पिस्टल स्पर्धाओं में हिस्सा लेंगी। 31 वर्षीय तजिंदरपाल सिंह तूर एशियाई खेलों में लगातार तीसरी बार स्वर्ण पदक जीतने के लक्ष्य के साथ उतरेंगे। उन्होंने 2018 जकार्ता और 2023 हांगझोउ एशियाई खेलों में गोला फेंक में स्वर्ण पदक जीता था। पिछले संस्करण में भारत ने चीन के हांगझोउ में कुल 106 पदक जीते थे, जिसमें 28 स्वर्ण पदक शामिल थे।



ब्राज़ील में कोपा लिबरटेडोर कप फुटबॉल के क्वार्टर फाइनल में खेलती हुई ब्राज़ील की फ्लेमिंगो और इक्वेडोर की डेल वेला

व्यापार समाचार

संक्षिप्त समाचार

स्टॉक मार्केट में ओम गैलेक्सी की सांकेतिक बढ़त के साथ एंट्री, मामूली फायदे में आईपीओ निवेशक

नई दिल्ली। पाइप फिटिंग, इंडस्ट्रियल मोलड और ऑटोमोटिव मोलड बनाने वाली कंपनी ओम गैलेक्सी लिमिटेड के शेयरों ने आज स्टॉक मार्केट में सांकेतिक बढ़त के साथ एंट्री की। आईपीओ के तहत कंपनी के शेयर 90 रुपये के भाव पर जारी किए गए थे। आज बीएसई के एसएसई प्लेटफॉर्म पर इसकी लिस्टिंग 0.22 प्रतिशत के सांकेतिक प्रीमियम के साथ 90.20 रुपये के स्तर पर हुई। लगभग सपाट स्तर पर हुई इस लिस्टिंग के बाद बिकवाली के दबाव में ये शेयर लुढ़क कर 85.75 रुपये के स्तर तक आ गया। इसके बाद खरीदारों ने लिवाली शुरू कर दी, जिसके कारण कंपनी के शेयरों के भाव में सुधार होने लगा। दिन भर हुई खरीद बिक्री के बाद कंपनी के शेयर 91 रुपये के स्तर पर बंद हुए। इस तरह पहले दिन के कारोबार में कंपनी के आईपीओ निवेशकों को प्रति शेयर एक रुपये यानी 1.11 प्रतिशत का मामूली मुनाफा हो गया। कंपनी का 105 करोड़ रुपये का आईपीओ 10 से 15 सितंबर के बीच सब्सक्रिप्शन के लिए खुला था। इस आईपीओ को निवेशकों की ओर से एवरेज रिसपॉन्स मिला था, जिसके कारण ये ओवरऑल 1.84 गुना सब्सक्राइब हुआ था। इममें क्वालिफाइड इंस्टीट्यूशनल बायर्स (क्व्आईबी) के लिए रिजर्व पोशन 2.93 गुना सब्सक्राइब हुआ था। इसी तरह नॉन इंस्टीट्यूशनल इन्वेस्टर्स (एनआईआई) के लिए रिजर्व पोशन में 1.07 गुना सब्सक्रिप्शन आया था। इसके अलावा रिटेल इन्वेस्टर्स के लिए रिजर्व पोशन सिर्फ 0.61 गुना सब्सक्राइब हो सका था। इस आईपीओ के तहत 5 रुपये फेस वैल्यू वाले 1,16,67,200 नए शेयर जारी किए गए हैं। आईपीओ के जरिये जुटाए गए पैसे का इस्तेमाल कंपनी अपनी नई मैन्यूफैक्चरिंग यूनिट सेटअप करने, पुराने कर्ज को कम करने, बर्किंग कैपिटल की जरूरतों को पूरा करने, आईपीओ से जुड़े खर्चों की भरपाई करने और आम कॉर्पोरेट उद्देश्यों में करेगी।

स्टॉक मार्केट में जबरदस्त गिरावट के साथ पंचत्व भारत की एंट्री, जबरदस्त नुकसान में आईपीओ निवेशक

नई दिल्ली। डेनिम फैब्रिकर का उत्पादन और थोक वितरण का काम करने वाली कंपनी पंचत्व भारत लिमिटेड के शेयरों ने आज स्टॉक मार्केट ने कमजोर एंट्री करके अपने आईपीओ निवेशकों को झटका दे दिया। आईपीओ के तहत कंपनी के शेयर 140 रुपये के भाव पर जारी किए गए थे। आज बीएसई के एसएसई प्लेटफॉर्म पर इसकी लिस्टिंग 7.89 प्रतिशत डिस्काउंट के साथ 128.95 रुपये के स्तर पर हुई। कमजोर लिस्टिंग के बाद बिकवाली शुरू हो गई, जिसकी वजह से ये शेयर और गिरता चला गया। लगातार हो रही बिकवाली के कारण ये शेयर कुछ देर में ही गिर कर 122.55 रुपये के लोअर सर्किट लेवल तक पहुंच गया। इस तरह पहले दिन के कारोबार में लोअर सर्किट लगाने के कारण कंपनी के आईपीओ निवेशकों को प्रति शेयर 17.45 रुपये यानी 12.46 प्रतिशत का नुकसान हो गया। आईपीओ के तहत 1,000 शेयर का एक लॉट बनाया गया है। इस तरह से आज पहले दिन ही आईपीओ निवेशकों को प्रति लॉट 17,450 रुपये तक का नुकसान हो गया। इस कंपनी का 24.58 करोड़ रुपये का आईपीओ 10 से 15 सितंबर के बीच सब्सक्रिप्शन के लिए खुला था। इस आईपीओ को निवेशकों की ओर से फीका रिसपॉन्स मिला था, जिसके कारण ये ओवरऑल 1.40 गुना सब्सक्राइब हुआ था। इनमें नॉन इंस्टीट्यूशनल इन्वेस्टर्स (एनआईआई) के लिए रिजर्व पोशन में सिर्फ 0.39 गुना सब्सक्रिप्शन आया था। जबकि रिटेल इन्वेस्टर्स के लिए रिजर्व पोशन 2.41 गुना सब्सक्राइब हो सका था। इस आईपीओ के तहत 10 रुपये फेस वैल्यू वाले कुल 17.56 लाख शेयर जारी किए गए हैं। आईपीओ में शेयरों को बिक्री के जरिये जुटाए गए पैसे का इस्तेमाल कंपनी पुराने कर्ज के बोझ को कम करने, बर्किंग कैपिटल की जरूरतों को पूरा करने, आईपीओ से जुड़े खर्चों की भरपाई करने और आम कॉर्पोरेट उद्देश्यों में करेगी।

मारुति संयंत्र के रेलवे टर्मिनल से वाहन ढुलाई आंकड़ा 10 लाख के पार

नई दिल्ली। ऑटोमोबाइल कंपनी मारुति सुजुकी इंडिया लिमिटेड (एमएसआईएल) ने गुजरात और हरियाणा के प्लांट में बनी रेलवे साइडिंग के जरिए 10 लाख गाड़ियों की डिलीवरी का आंकड़ा पार कर लिया है। दोनों विनिर्माण संयंत्रों के रेलवे टर्मिनल के जरिये 10 लाख वाहनों की ढुलाई की गई है। यह आंकड़ा इन संयंत्रों में विशेष परिवहन लाइन शुरू करने के तीन साल से कुछ अधिक समय में हासिल किया गया है। मारुति सुजुकी इंडिया ने शुक्रवार को कहा कि कुल डिस्पैच में गुजरात का हिस्सा 7.9 लाख है, जबकि मानेसर का योगदान 2.1 लाख है। मारुति सुजुकी ने कहा कि अगर तक वित्त वर्ष 2026-27 में मारुति के रेल-आधारित डिस्पैच में इन दोनों सेंटर्स की



हिस्सेदारी 70 फीसदी रही। इसमें गुजरात (हरियाणा) रेलवे साइडिंग से परिचालन

की शुरुआत जून 2025 में हुआ था। कंपनी ने बताया कि चालू वित्त वर्ष 2026-27 में रेल आधारित कुल वाहन ढुलाई में से 70 फीसदी इन दो संयंत्र स्थित रेलवे साइडिंग के माध्यम से की गई है। उसका मध्यम अवधि का लक्ष्य वित्त वर्ष 2030-31 तक कुल ढुलाई में रेलवे की हिस्सेदारी बढ़ाकर 35 फीसदी करने का है। मारुति सुजुकी ने बताया कि चालू वित्त वर्ष में 31 अगस्त तक उसकी रेल आधारित वाहन ढुलाई तीन लाख इकाइयों के आंकड़े को पार कर चुकी है। मारुति सुजुकी इंडिया लिमिटेड के मुख्य कार्यपालक अधिकारी (सीओ) एवं प्रबंध निदेशक हिसारी ताकेउची ने कहा कि हमारे संयंत्र स्थित रेलवे साइडिंग के जरिये कुल 10 लाख वाहनों की ढुलाई का आंकड़ा छूना

हमारी हरित लॉजिस्टिक यात्रा में एक ऐतिहासिक उपलब्धि है। उन्होंने कहा कि पीएम गतिशक्ति राष्ट्रीय मास्टर प्लान के तहत विकसित ये साइडिंग दर्शाती हैं कि कैसे एकीकृत मल्टी-मॉडल बुनियादी ढांचा परिचालन दक्षता और पर्यावरणीय लाभ दोनों प्रदान कर सकता है। मारुति सुजुकी अपने विनिर्माण संयंत्रों में रेलवे साइडिंग स्थापित करने वाली भारत की पहली और एकमात्र यात्री वाहन निर्माता कंपनी है। कंपनी ने कहा कि संयंत्र स्थित इन सुविधाओं के जरिये वाहनों के परिवहन को सड़क से रेल पर स्थानांतरित करने से ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को रोकने, ईंधन की खपत घटाने और सड़कों पर भीड़भाड़ को कम करने में मदद मिली है।

मूडीज ने भारत की जीडीपी वृद्धि दर का अनुमान बढ़ाकर किया सात फीसदी

नई दिल्ली। पश्चिम एशिया में जारी संकट के बीच वैश्विक झटकों के बावजूद भारतीय अर्थव्यवस्था ने मजबूती दिखाई है। वैश्विक रेटिंग एजेंसी मूडीज रेटिंग्स ने चालू वित्त वर्ष 2026-27 के लिए भारत की सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) वृद्धि दर का अनुमान छह फीसदी से बढ़ाकर सात फीसदी कर दिया है। एजेंसी ने साथ ही तेल की ऊंची कीमतों और अल नीनो के असर से महंगाई बढ़ने के जोखिम को लेकर आगाह किया है। रेटिंग एजेंसी ने शुक्रवार को जारी अपने ताजा अनुमान में कहा कि वर्ष 2026 की पहली तिमाही में वार्षिक आधार पर भारत की वास्तविक जीडीपी वृद्धि दर 8.2 फीसदी रही, जबकि 2025 में यह 7.3 फीसदी रही थी। यह मजबूत निजी खपत, निवेश, बुनियादी ढांचे पर सरकार के लगातार खर्च, सेवा क्षेत्र की मजबूती और निजी निवेश में तेजी के

कारण संभव हुआ है। इस महीने की शुरुआत में जापान की क्रेडिट रेटिंग एजेंसी 'जेसीआर' ने भारत की रेटिंग को बढ़ाकर 'ए-' कर दिया था। मजबूत आर्थिक वृद्धि और मजबूत वित्तीय प्रणाली का हवाला देते हुए 35 साल के अंतराल के बाद यह उपलब्धि हासिल हुई थी। रेटिंग एजेंसी ने कहा कि पश्चिम एशिया में संघर्ष से उत्पन्न हुए वैश्विक झटके के प्रति अर्थव्यवस्था की दिखाई गई मजबूती के कारण हमने 31 मार्च, 2027 को समाप्त होने वाला वित्त वर्ष 2026-27 में वास्तविक जीडीपी वृद्धि का अनुमान पहले के छह फीसदी से बढ़ाकर सात प्रतिशत कर दिया है। एजेंसी ने बताया कि जीडीपी वृद्धि दर के अनुमान में यह संशोधन पश्चिम एशिया में जारी संकट के कारण उत्पन्न अनिश्चितताओं के बीच भारतीय अर्थव्यवस्था की मजबूती को दर्शाता है।



उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने केंद्रीय रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री एन. चंद्रबाबू नायडू और केंद्रीय मंत्री धिरंग पासवान के साथ मित्रकर वाणपसी, उत्तर प्रदेश में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 76वें जन्मदिन के मौके पर काशी से पडनगर तक सेवा संकल्प बाइक यात्रा को हरी झंडी दिखाई।

भारत-अफगानिस्तान द फ्रेंडशिप कप पर रोहन जेटली ने जताया उत्साह

नई दिल्ली। दिल्ली एवं जिला क्रिकेट संघ (डीडीसीए) के अध्यक्ष रोहन जेटली ने भारत और अफगानिस्तान के बीच खेली गई ९४ फ्रेंडशिप कप% टी-20 श्रृंखला के सफल आयोजन पर खुशी जताई है। उन्होंने भारत को तीन मैचों की श्रृंखला में 3-0 से जीत को बधाई देते हुए कहा कि यह श्रृंखला क्रिकेट के शानदार उत्सव के साथ-साथ दोनों देशों के बीच मजबूत रिश्तों की भी अभिव्यक्ति बनी। रोहन जेटली ने कहा, भारतीय टीम को अफगानिस्तान के खिलाफ यादगार 3-0 की श्रृंखला जीत के लिए बधाई। द फ्रेंडशिप कप क्रिकेट का शानदार उत्सव रहा। अरुण जेटली स्टेडियम में तीनों मैचों के दौरान 85 हजार से अधिक दर्शकों की भारी मौजूदगी देखकर बेहद खुशी हुई। अफगानिस्तान से भी हजारों प्रशंसक इस अवसर का हिस्सा बनने के लिए दिल्ली पहुंचे। पूरी श्रृंखला के दौरान स्टेडियम में नजर आया शानदार माहौल दिल्ली में क्रिकेट के प्रति लोगों के जुनून को दर्शाता है। उन्होंने कहा कि अफगानिस्तान द्वारा भारत के खिलाफ अपनी घरेलू श्रृंखला दिल्ली में खेलना दोनों देशों के बीच मजबूत संबंधों और लोगों को करीब लाने में खेल की भूमिका का बेहतरीन उदाहरण रहा। उन्होंने इसे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के पड़ोसी देशों के साथ मजबूत संबंधों के दृष्टिकोण के अनुरूप भी बताया। डीडीसीए अध्यक्ष ने कहा, हम अफगानिस्तान क्रिकेट बोर्ड, भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड और आईसीसी अध्यक्ष जय शाह के सहयोग और प्रयासों के लिए आभारी हैं, जिनकी वजह से यह श्रृंखला संभव हो सकी और दिल्ली को अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट के इस यादगार अध्याय का हिस्सा बनने का अवसर मिला। उन्होंने कहा, हमें गर्व है कि डीडीसीए और दिल्ली भारत तथा अफगानिस्तान के बीच तीन रोमांचक मुकाबलों की मेजबानी में अपनी भूमिका निभा सके। इससे प्रशंसकों को दोनों टीमों के बीच शानदार और उच्च स्तर का क्रिकेट देखने का अवसर मिला।

न्यूजीलैंड महिला क्रिकेट टीम के कोच बेन सॉयर का चार साल बाद कार्यकाल समाप्त

वेलिंगटन। न्यूजीलैंड क्रिकेट ने महिला टीम की मुख्य कोच बेन सॉयर के अनुबंध को आगे नहीं बढ़ाने का फैसला किया है। चार साल तक टीम की जिम्मेदारी संभालने वाले सॉयर का कार्यकाल दिसंबर 2026 तक था, लेकिन महिला क्रिकेट की उच्च प्रदर्शन संरचना की व्यापक समीक्षा के बाद न्यूजीलैंड क्रिकेट ने बदलाव का निर्णय लिया। न्यूजीलैंड क्रिकेट के अनुसार, समीक्षा में महिला टीम के लिए एक नई 'परफॉर्मेंस लीड' भूमिका की जरूरत सामने आई है। इसके अलावा, रैचल पेटिट के पास मौजूद मैनेजर का पद भी समाप्त कर दिया गया है। अगले महीने ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ होने वाली टी20 अंतरराष्ट्रीय श्रृंखला के लिए अंतरिम मुख्य कोच और टीम मैनेजर टीम की जिम्मेदारी संभालेंगे। स्थायी मुख्य कोच और परफॉर्मेंस लीड के पदों के लिए भर्ती प्रक्रिया जल्द शुरू होगी। ऑस्ट्रेलिया दौर के लिए न्यूजीलैंड की टीम की घोषणा अक्टूबर की शुरुआत में की जाएगी। सॉयर ने जून 2022 में न्यूजीलैंड महिला टीम की जिम्मेदारी संभाली थी। उनके कार्यकाल में टीम ने बर्मिंघम रायमंडल खेलों में कांस्य पदक जीता और सबसे बड़ी उपलब्धि के रूप में 2024 आईसीसी महिला टी20 विश्व कप का ऐतिहासिक खिताब अपने नाम किया। जॉर्जिया विलमर, इडन कारन और इज़ी गेज जैसी युवा खिलाड़ियों ने भी सॉयर के कार्यकाल में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाई और विश्व कप विजेता टीम का हिस्सा भी। सॉयर ने न्यूजीलैंड क्रिकेट के हवाले से कहा, व्हाइट फर्नस की कोचिंग करना मेरे लिए बहुत बड़ा सम्मान रहा और मैं इस टीम का नेतृत्व करने का अवसर मिलने के लिए बेहद आभारी हूं। यह टीम मेरे लिए बहुत मान्यने रखती है और मुझे पिछले चार वर्षों में हमने जो हासिल किया, उस पर बेहद गर्व है। हालांकि टीम से अलग होने की लेखर में निराश हूं, लेकिन मैं टीम और न्यूजीलैंड क्रिकेट को भविष्य के लिए शुभकामनाएं देता हूं। न्यूजीलैंड क्रिकेट के मुख्य हाई परफॉर्मेंस क्रिकेट अधिकारी डेरिल गिब्सन ने सॉयर के योगदान की सराहना करते हुए कहा, बेन ने व्हाइट फर्नस के लिए बदलाव और प्रगति के महत्वपूर्ण दौर का नेतृत्व किया।

शुद्ध प्रत्यक्ष कर संग्रह 13

फीसदी बढ़कर 12.12 लाख करोड़ रुपये पर पहुंचा

नई दिल्ली। देश की अर्थव्यवस्था और सरकारी खजाने के लिए राहत देने वाली खबर है। चालू वित्त वर्ष 2026-27 में सरकार का शुद्ध प्रत्यक्ष कर संग्रह 17 सितंबर तक 13 फीसदी बढ़कर 12.12 लाख करोड़ रुपये से अधिक रहा है। अग्रिम कर संग्रह में वृद्धि से प्रत्यक्ष कर संग्रह बढ़ा है। केंद्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड (सीबीडीटी) के आंकड़ों के अनुसार 17 सितंबर तक सकल प्रत्यक्ष कर संग्रह 15 फीसदी बढ़कर 14.32 लाख करोड़ रुपये से अधिक रहा है।

रक्सन ट्रांसफॉर्मर्स की स्टॉक मार्केट में पलैट

एंट्री, शुरुआती गिरावट के बाद लगा अपर सर्किट

नई दिल्ली। इलेक्ट्रिक ट्रांसफॉर्मर बनाने वाली कंपनी रक्सन ट्रांसफॉर्मर्स लिमिटेड के शेयरों ने आज स्टॉक मार्केट में पलैट एंट्री कर अपने आईपीओ निवेशकों को शुरुआती झटका दे दिया। हालांकि लिस्टिंग के बाद खरीदारी का सपोर्ट मिलने पर यह शेयर मुनाफे की स्थिति में आ गया। आईपीओ के तहत कंपनी के शेयर 273 रुपये के भाव पर जारी किए गए थे। आज बीएसई के एसएसई प्लेटफॉर्म पर इसकी लिस्टिंग बिना किसी उतार चढ़ाव के 273 रुपये के स्तर पर ही हुई। पलैट लिस्टिंग के बाद बिकवाली के दबाव

में ये शेयर लुढ़क कर 261.30 रुपये के स्तर तक पहुंच गया। इसके बाद खरीदारों ने लिवाली शुरू कर दी। लिवाली के सपोर्ट से ये शेयर कुछ देर में ही रिकवरी कर रहे निशान में पहुंच गया। बाजार में लगातार हो रही खरीदारी के कारण ये शेयर आज का कारोबार खत्म होने के थोड़ी देर पहले 286.60 रुपये के अपर सर्किट लेवल पर पहुंच गया और इसी स्तर पर बंद हुआ। इस तरह पहले दिन के कारोबार में कंपनी के आईपीओ निवेशकों को प्रति शेयर 13.60 रुपये यानी 4.98 प्रतिशत का फायदा हो गया।

एनपीएस वात्सल्य के दो साल पूरे, अब तक खुले 4.9 लाख पेंशन खाते

नई दिल्ली। एनपीएस वात्सल्य योजना के दो साल पूरे होने पर देश में कुल 4.9 लाख पेंशन खाते खुल चुके हैं। इसका प्रबंधन अधीन कुल परिसंपत्ति (एयूएम) 403 करोड़ रुपये तक पहुंच गई है। पेंशन निधि विनियामक एवं विकास प्राधिकरण (पीएफआरडीए) के मुताबिक 18 साल से कम उम्र के बच्चों लिए शुरू की गई एनपीएस वात्सल्य के तहत पिछले दो वर्षों में 4.9 लाख पेंशन खाते खुले हैं। इसके तहत प्रबंधन अधीन परिसंपत्ति 403 करोड़ रुपये पहुंच गई है। पिछले दो वर्षों में पंजीकरण बढ़ाने और कम उम्र में वित्तीय योजना शुरू करने के महत्व को लेकर जागरूकता फैलाने पर ध्यान केंद्रित किया गया है। पेंशन विनियामक ने कहा कि सात जनवरी को जारी और 23 फरवरी से प्रभावी एनपीएस वात्सल्य योजना के दिशा-निर्देशों ने अंशदान, निवेश, निकासी और वयस्क होने के बाद योजना में बदलाव की प्रक्रिया को मजबूत किया है।

पीएफआरडीए के अनुसार योजना में न्यूनतम अंशदान राशि को घटाकर 250 रुपये कर दिया गया है और अधिकतम अंशदान की कोई सीमा नहीं है। साथ ही आंशिक निकासी की सुविधा को दो बार से बढ़ाकर चार बार किया गया है और निवेश विकल्पों को सुगम करते हुए इंडिटी में 100 फीसदी तक निवेश की अनुमति दी गई है। नियामक ने कहा कि एनपीएस वात्सल्य के तीसरे वर्ष में प्रवेश के साथ इसका लक्ष्य देशभर में अधिक बच्चों, परिवारों और समुदायों तक इस योजना को पहुंचाना है। पीएफआरडीए ने कहा कि उपहार अंशदान सुविधा के तहत आप रिश्तेदार और मित्र भी बच्चे के दीर्घकालिक वित्तीय भविष्य के लिए योगदान कर सकते हैं। केंद्रीय वित्त एवं कॉर्पोरेट मामलों की मंत्री निर्मला सीतारमण ने 18 सितंबर, 2024 को एनपीएस वात्सल्य योजना की शुरुआत की थी।



युवा, मध्यप्रदेश के सामर्थ्य का जीवन्त प्रतीक हैं। राज्य सरकार ने वर्ष 2025 को, निवेश और रोजगार वर्ष के रूप में मनाया था, वर्ष 2026 किसान कल्याण वर्ष है और अब इसे आगे बढ़ाते हुए वर्ष 2027 को युवा वर्ष के रूप में, मनाने का निर्णय लिया है। युवाओं के संपूर्ण व्यक्तित्व विकास और कल्याण के लिए, मोहन सरकार ने इन्द्रधनुषी रणनीति का निर्माण किया है, जिसके 07 महत्वपूर्ण स्तंभ हैं-

राज्य सरकार ने 85 हजार से अधिक युवाओं की. शासकीय सेवाओं में नियुक्तियां की है। इसी प्रकार अगले 01 वर्ष में 01 लाख से अधिक युवाओं को आईटीआई में तथा प्रतिवर्ष 10 हजार युवाओं को ग्लोबल स्किल पार्क में कौशल प्रशिक्षण दिलाने का काम करेगी। कौशल विकास के अंतर्गत, मध्यप्रदेश में एक अलग प्लेसमेंट सेल बनाया जाएगा, जो

रणनीति के 7 महत्वपूर्ण स्तंभ

- गुणवत्तायुक्त शिक्षा
- कौशल विकास
- उद्यमिता एवं स्वरोजगार
- सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्र में रोजगार के अवसर
- स्टार्टअप को सहयोग
- खेल, कला, संस्कृति, शोध एवं अनुसंधान प्रोत्साहन
- नेतृत्व क्षमता विकास

राज्य सरकार अगले ढाई वर्ष में, उन युवाओं पर विशेष रूप से फोकस करने जा रही है, जो किसी कारण से 10वीं की परीक्षा में

उत्तीर्ण नहीं हो पाए अथवा जिन्होंने 10वीं के बाद पढ़ाई छोड़ दी है। ऐसे युवाओं के हाथ में हुनर देकर, उन्हें इतना सशक्त बनाया जाएगा कि वे प्रदेश ही नहीं बल्कि देश और विदेश जाकर भी रोजगार प्राप्त कर सकें।

युवाओं को केन्द्र में रखकर, MSME और स्टार्टअप इकोसिस्टम को नई गति देने के लिए प्रदेश में मध्यप्रदेश M S M E विकास नीति 2025', 'स्टार्टअप नीति एवं कार्यान्वयन योजना 2025' नीति लागू की गई। वर्तमान में लगभग 8 हजार स्टार्टअप संचालित हैं, इसमें से 50 प्रतिशत स्टार्टअप का नेतृत्व, नारी शक्ति, कर रही है। प्रदेश के हर जिले में, कम से कम एक इंक्यूबेशन सेंटर बनाया जायेगा। आगामी ढाई वर्षों में स्टार्ट-अप की संख्या 12 हजार से अधिक

और 100 नवीन इन्क्यूबेशन सेंटर की स्थापना करने का लक्ष्य है। 'प्लग-एंड-प्ले' मॉडल पर, को-वर्किंग स्पेस तैयार किए जाएंगे। युवा पीढ़ी की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए, ड्रोन, सेमीकंडक्टर, एआई, स्पेसटेक और ग्रीन मैनुफैक्चरिंग जैसे उभरते क्षेत्रों में, एमएसएमई की भागीदारी को अनिवार्य रूप से बढ़ाया जाएगा। प्रतियोगी परीक्षाओं से संबंधित न्यायालीन मामलों की, त्वरित सुनवाई और निराकरण के लिए, राज्य सरकार ने 04 'फास्ट ट्रैक कोर्ट स्थापित करने का भी निर्णय लिया है।



18.95 लाख जनजातीय विद्यार्थियों को 189 करोड़ छात्रवृत्ति 3.18 लाख जनजातीय विद्यार्थियों को 556 करोड़ की पोस्ट मैट्रिक छात्रवृत्ति



प्री मैट्रिक छात्रवृत्ति योजना कक्षा 01 से 10 में वर्ष 2003 से अभी तक लगभग 3,96,24,580 (तीन करोड़ छियानवे लाख चौबीस हजार पांच सौ अस्सी) एवं पोस्ट मैट्रिक छात्रवृत्ति अंतर्गत वर्ष 2003 से वर्ष 2025-

26 तक लगभग 58,02,143 (अठ्ठावन लाख दो हजार एक सौ तिरालीस) इस प्रकार लगभग 4,54,26,723 (चार करोड़ चौवन लाख छब्बीस हजार सात सौ तेईस) विद्यार्थियों लाभान्वित किया गया है।

51 विद्यार्थियों को विदेशों में अध्ययन के मौके

विदेश अध्ययन छात्रवृत्ति योजना अंतर्गत विदेश में अध्ययन के लिए प्रति विद्यार्थी, प्रतिवर्ष 40 हजार यू.एस. डॉलर कोचिंग शुल्क एवं 10 हजार यू.एस. डॉलर जीवन निर्वाह भत्ता एवं अन्य आकस्मिक भत्ते हेतु राशि प्रदान की जाती है।

विगत 09 वर्षों में 51 विद्यार्थियों को विदेश अध्ययन स्थित विश्वविद्यालयों में उच्च अध्ययन प्राप्त किया जा रहा है।

छात्रावास जनजातीय कार्य विभाग द्वारा कुल 2671 छात्रावास एवं आश्रम शालाओं का संचालन किया जा रहा है जिसके लिए वित्तीय

वर्ष 2026-27 हेतु राशि रुपये 7 सौ 27 करोड़ का बजट प्रावधान किया गया है। परीक्षा पूर्व प्रशिक्षण योजना अंतर्गत वर्ष 2025-26 में केन्द्र सरकार द्वारा प्रत्येक संभागीय मुख्यालय पर 10 परीक्षा पूर्व प्रशिक्षण केन्द्र हेतु भवन स्वीकृत किये गये हैं।

प्रतिभा योजना अंतर्गत अनुसूचित जनजाति वर्ग के कक्षा 12वीं उत्तीर्ण विद्यार्थियों को राष्ट्रीय प्रवेश परीक्षाओं के माध्यम से प्रतिष्ठित संस्थाओं IIT, NIT, NLIU, शासकीय मेडिकल कॉलेज में चयन होने पर पुरस्कार राशि प्रदाय की



जाती है। इस योजना में वर्ष 2025-26 में 272 विद्यार्थियों को राशि रुपये 71 लाख वितरित की गई। मध्यप्रदेश स्पेशल एण्ड रेसीडेंशियल एकेडमिक सोसायटी के द्वारा 71 एकलव्य आदर्श आवासीय, 82 माता शबरी

आवासीय कन्या शिक्षा परिसर एवं 08 आदर्श आवासीय विद्यालयों का संचालन किया जा रहा है। इन विद्यालयों में 61 हजार से अधिक विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा दी जा रही है।

पिछड़ा वर्ग के 5 करोड़ से अधिक विद्यार्थी लाभान्वित 13 हजार करोड़ से अधिक की राशि स्वीकृत



मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के दूरदर्शी नेतृत्व और निर्णयों के फलस्वरूप प्रदेश में पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों को शिक्षा के हर स्तर पर अभूतपूर्व प्रोत्साहन और वित्तीय

सहयोग मिल रहा है। पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों को राज्य सरकार द्वारा प्राथमिक शिक्षा से विदेश अध्ययन के लिये छात्रवृत्ति, निःशुल्क कोचिंग और प्रशिक्षण जैसी महत्वपूर्ण

योजनाओं में पिछले 15 वर्षों में 13 हजार 156 करोड़ 51 लाख से अधिक की वित्तीय सहायता दी गई है। योजनाओं से लगभग 5 करोड़ 34 लाख 39 हजार 54 से अधिक विद्यार्थी लाभान्वित हुए।

प्री एवं पोस्ट-मैट्रिक छात्रवृत्ति से मदद

स्कूली स्तर पर ड्रॉप-आउट दर को समाप्त करने और बच्चों की पढ़ाई निरंतर बनाए रखने के लिए संचालित प्री-मैट्रिक छात्रवृत्ति योजना के अंतर्गत वर्ष 2012-13 से 2026-27 तक पिछड़ा वर्ग के 4 करोड़ 50 लाख से अधिक

विद्यार्थियों को ₹ 2,535 करोड़ से अधिक की छात्रवृत्ति वितरित की जा चुकी है। इसके साथ ही स्कूली शिक्षा में उत्कृष्ट अंक लाने वाले होनहारों को 'प्रावीण्य (मेधावी) छात्रवृत्ति योजना' के तहत पिछड़ा वर्ग के 2,185 विद्यार्थियों को 1 करोड़ 69 लाख रुपये की राशि दी गई है। उच्च एवं व्यावसायिक शिक्षा में कॉलेज स्तर के छात्रों को राहत देते हुए 'पोस्ट-मैट्रिक छात्रवृत्ति योजना' के तहत वर्ष 2012-13 से 2026-27 के दौरान इसी वर्ग के 84.22 लाख विद्यार्थियों को ₹10,467 करोड़ की राशि से संबल प्रदान किया गया है।

शिक्षा को बढ़ावा देने म.प्र. सरकार ज्ञानोदय आवासीय विद्यालय, छात्रावास एवं उत्कृष् 8 छात्रावास के रूप में 1933 छात्रावासों का संचालन कर रही है। इनमें एक लाख से अधिक सीट स्वीकृत है। अनुसूचित

जाति छात्रावास भवनों का निर्माण, आवास सहायता योजना, छात्रावासों के लिए उत्कृष्टता पुरस्कार योजना, छात्रावासों में पुस्तकालय योजना, प्रसाधन किट प्रदाय योजना, दिल्ली में उच्च शिक्षा हेतु छात्रावास

सुविधा को गुणवत्ता सहित लागू कर अनुसूचित जाति के युवाओं की शिक्षा के स्तर का उन्नयन किया जा रहा है। इस वर्ष राशि रु. 420.00 करोड़ के 84 छात्रावास के नवीन भवनों का निर्माण कराया जा रहा

है। कक्षा 1 से लेकर महाविद्यालयीन स्तर तक की शिक्षा को सुगम बनाये जाने हेतु विभिन्न छात्रवृत्ति योजनाएँ संचालित की जा रही है। वर्ष 2025-26 में कक्षा 1 से 12 तक के लिये 13 लाख 37 हजार विद्यार्थियों को राशि रु.

73.71 करोड़ की छात्रवृत्ति स्वीकृत की गई है। महाविद्यालय स्तर के लिये 2 लाख 09 हजार विद्यार्थियों को राशि रु. 344.02 करोड़ की पोस्ट मैट्रिक छात्रवृत्ति स्वीकृत की गई है।

D11118/26

19 जनजातीय बहुल जिलों में 94 सांदीपनि विद्यालय



सांदीपनि विद्यालय

कुल भवन 274 निर्माणाधीन भवन 167

पूर्ण हो चुके भवन 97 लोकार्पित विद्यालय 74

लोकार्पण के लिए तैयार 23

सांदीपनि विद्यालय शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार हेतु नवीन शिक्षा नीति के दृष्टिगत सर्व संसाधन संपन्न विद्यालयों की स्थापना के लिए योजनान्तर्गत प्रथम चरण में 19 जिलों में 94 सांदीपनि विद्यालयों का संचालन किया जा रहा है। इन विद्यालयों के 55 भवनों का निर्माण पूर्ण हो गया है एवं 39 भवन निर्माणाधीन हैं।

निर्माण :- आश्रम शाला/जूनियर छात्रावास/सीनियर छात्रावास/महाविद्यालयीन छात्रावास, माता शबरी आवासीय कन्या शिक्षा परिसर, क्रीडा परिसर एवं सांदीपनि विद्यालयों के भवन निर्माण कार्य के लिए वित्तीय वर्ष 2026-27 में पूंजीगत मद में राशि रु. 1 हजार 7 सौ 37 करोड़ का

बजट प्रावधान किया गया है।

जनजातीय उपयोगना :- अनुसूचित जनजातियों के सर्वांगीण विकास हेतु विभिन्न विभागों के माध्यम से आर्थिक, मानव संसाधन, क्षेत्र विकास एवं अन्य विकास कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं। संबंधित विकास विभागों द्वारा जनजातीय उपयोगना अंतर्गत प्रावधानित बजट एवं व्यय की राशि का अनुश्रवण जनजातीय कार्य विभाग के स्तर पर किया जाता है।

वित्तीय वर्ष 2025-26 में जनजातीय उपयोगना अंतर्गत राशि रु. 37350 करोड़ का व्यय किया गया। वर्ष 2026-27 में 47428 करोड़ का प्रावधान किया गया है।

अनुसूचित जाति के बच्चों को शिक्षा के बेहतर अवसर 84 छात्रवासों के लिए 420 करोड़

